केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब
www.bhartiyabasti.com
और उसका छपा संस्करण
सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406
भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :46 अंक 154 शनिवार 28 दिसम्बर 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

फार्मर रजिस्ट्रेशन कराएं, नहीं तो रुक जाएगी सम्मान निधि

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर स्थित जन सेवा केंद्रों पर शुक्रवार को राजस्व टीम के साथ नायब तहसीलदार माधुर्य यादव ने जाकर फार्मर रजिस्ट्रेशन का हाल जाना। उन्होंने जन सेवा केंद्रों के संचालकों से लोगों को जागरूक कर रजिस्ट्रेशन कराने को कहा। उन्होंने कहा की 31 दिसंबर 2024 तक सभी को रजिस्ट्रेशन कराना है। बिना रजिस्ट्रेशन के किसान सम्मान निधि नहीं मिलेगी। नायब तहसीलदार ने उस्का कस्बा के विजय जन सेवा केंद्र पर जाकर फार्मर रजिस्ट्रेशन की स्थिति के बारे में जानकारी ली। केंद्र संचालक विजय ने बताया कि सर्वर बहुत धीमा चल रहा है। इससे रजिस्ट्रेशन की गति धीमी है। नायब तहसीलदार ने बताया कि सोहांस बाजार, तेतरी चौराहा, पकड़ी आदि स्थानों पर फार्मर रजिस्ट्रेशन कराने के लिए लोगों को जागरूक किया गया है। इस अवसर पर कानूनगो गिरीश चंद मिश्र, संजय, मनमोहन आदि मौजूद रहे।

सीनियर छात्रों ने चौथी के छात्र से किया कुकर्म

संवाददाता–गोरखपुर। राजघाट इलाके के एक निजी स्कूल में कक्षा चार के छात्र से सीनियर छात्रों द्वारा हैवानियत का मामला प्रकाश में आया है। बच्चे की आपबीती सुन परिजन शुक्रवार को स्कूल पहुंच कर हंगामा किए। वह कक्षा सात व आठ के अज्ञात छात्रों के खिलाफ पुलिस को तहरीर दिए। पुलिस इस मामले में पॉक्सो की धारा में केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार, रामगढ़ताल इलाके का रहने वाला 12 वर्षीय बालक राजघाट इलाके में स्थित एक निजी स्कूल में कक्षा चौथी का छात्र है। पिता का आरोप है कि स्कूल के ही कक्षा 7वीं और 8वीं में पढ़ने वाले पांच–छह छात्र पिछले 15–20 दिनों के साथ उसके साथ सामूहिक अप्राकृतिक दुष्कर्म कर रहे थे। वह इसकी जानकारी किसी को देने पर जानमाल की धमकी भी दे रखे थे।

बृहस्पतिवार को बच्चे ने रोते हुए घटना की जानकारी परिजनों को दिया। परिजन शुक्रवार को स्कूल पहुंच कर हंगामा किए। घटना की जानकारी होने पर पहुंची पुलिस ने उनको समझा–बुझाकर शांत किया। एसपी सिटी अभिनव त्यागी ने बताया कि पीड़ित बच्चे के पिता की तहरीर पर पॉक्सो की धारा में केस दर्ज कर मामले की जांच कराई जा रही है।

बाइक से गिरी महिला की मौत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बनकटी (बस्ती)। लालगंज थाना क्षेत्र के बनकटी कनेहटी मार्ग के बखरिया गांव के निकट ममेरा भाई अनिल के साथ ननिहाल रौतापार से वापस घर जा रही 45 वर्षीय मंजू शर्मा पत्नी रामधनी की बाइक से गिरने से मौत हो गई। वह ननिहाल एक कार्यक्रम से वापस अपने घर लौट रही थी कि अनियंत्रित बाइक होने से बाईक के पीछे बैठी महिला सड़क पर जा गिरी और मौत हो गई।

संतकबीरनगर जनपद के महुली थाना क्षेत्र की भोगीपुर निवासी मंजू शर्मा अपने ननिहाल लालगंज थाना के रौतापार गांव में हीरा लाल के यहां एक दिन पूर्व किसी कार्यक्रम में आईं थीं और शुक्रवार को दोपहर बाद ममेरा भाई के साथ बाईक से वापस घर जा रही थी कि जैसे ही बखरिया गांव के निकट पहुंच ही रही थी कि बाईक अनियंत्रित हुआ कि पीछे बैठी मंजू सड़क पर जा गिरी जिससे सर में गंभीर चोटे आई आनन फानन में लोगों ने पीएचसी बनकटी पहुंचाया जहां से गंभीर हालत देख डां० राजेश कुमार ने ओपेक कैली अस्पताल भेज दिया और वहां देखते ही चिकत्सक मृत घोषित कर दिया।

मृतक मंजू के दो बेटा एक बेटी के अलावा परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हैं।

निगम बोध घाट पर होगा मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार

कांग्रेस ने किया स्मारक स्थल के लिये जमीन की मांग

नई दिल्ली (आभा)। कांग्रेस का साफ तौर पर मानना है कि दिवंगत पूर्व पीएम डॉ मनमोहन सिंह के लिए उनके कद के अनुसार अंतिम संस्कार और स्मारक के लिए उचित स्थान दिया जाना चाहिए। पूर्व पीएम मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार 28 दिसंबर सुबह 11.45 बजे निगम बोध घाट पर किया जाएगा।

कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की बैठक दिल्ली में एआईसीसी मुख्यालय में पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, सीपीपी अध्यक्ष सोनिया गांधी, लोकसभा नेता और सांसद राहुल गांधी और अन्य कांग्रेस नेताओं की उपस्थिति में बैठक हुई। यह बैठक पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि देने के लिए बुलाई गई थी। वहीं, कांग्रेस ने केंद्र से मांग की है कि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के लिए दिल्ली में यमुना नदी के किनारे स्थल दी जाए, जहां कई पूर्व प्रधानमंत्रियों के स्मारक हैं।

विज्ञप्ति में कहा गया है कि कांग्रेस कार्य समिति एक सच्चे राजनेता डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त करती है, जिनके जीवन और कार्य ने भारत की नियति को गहराई से आकार दिया है। डॉ. सिंह भारत के राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य में एक महान व्यक्ति थे, जिनके योगदान ने देश को बदल दिया और उन्हें दुनिया भर में सम्मान मिला। 1990 के दशक की शुरुआत में वित्त मंत्री के रूप में, डॉ. सिंह भारत के आर्थिक उदारीकरण के वास्तुकार थे।

इसमें आगे कहा गया कि बेजोड़ दूरदर्शिता के साथ, उन्होंने सुधारों की एक श्रृंखला शुरू की, जिसने न केवल देश को भुगतान संतुलन संकट से बचाया बल्कि वैश्विक बाजारों के लिए दरवाजे भी खोले। विनियमन, निजीकरण और विदेशी निवेश को प्रोत्साहन की अपनी नीतियों के माध्यम से, उन्होंने भारत की तीव्र आर्थिक वृद्धि की नींव रखी। उनके नेतृत्व में, भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभरा, जो उनकी प्रतिभा और दूरदर्शिता का प्रमाण है।

मनमोहन सिंह के निधन पर सोनिया गांधी ने भी बड़ा संदेश लिखा है। उन्होंने लिखा कि डॉ. मनमोहन सिंह के निधन से, हमने एक ऐसा नेता खो दिया है जो ज्ञान, बड़प्पन और विनम्रता का प्रतीक था, जिसने पूरे दिल और दिमाग से हमारे देश की सेवा की। कांग्रेस पार्टी के लिए एक चमकदार और प्रिय मार्गदर्शक, उनकी करुणा और दूरदर्शिता ने लाखों भारतीयों के जीवन को बदल दिया और सशक्त बनाया। उनके शुद्ध हृदय और उत्कृष्ट दिमाग के कारण उन्हें भारत के लोग बहुत प्यार करते थे। गांधी ने कहा कि उनकी सलाह, बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह और विचारों की हमारे देश के राजनीतिक क्षेत्र में उत्सुकता से मांग की जाती थी और उन्हें गहराई से महत्व दिया जाता था। दुनिया भर के नेताओं और विद्वानों द्वारा उनका सम्मान और प्रशंसा की गई, उन्हें अपार ज्ञान और कद के राजनेता के रूप में सराहा गया। डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने द्वारा संभाले गए प्रत्येक उच्च पद पर प्रतिभा और विशिष्टता लाई। और उन्होंने भारत को गौरव और सम्मान दिलाया। मेरे लिए डॉ. मनमोहन सिंह का निधन एक गहरी व्यक्तिगत क्षति है।

उन्होंने कहा कि वह मेरे मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक थे। वह अपने व्यवहार में बहुत सौम्य थे लेकिन अपने गहरे विश्वासों में बहुत दृढ़ थे। सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता गहरी और अटूट थी। उनके साथ कोई भी समय बिताने का मतलब उनके ज्ञान और दूरदर्शिता से प्रबुद्ध होना, उनकी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से प्रभावित होना और उनकी वास्तविक विनम्रता से आश्चर्यचकित होना था। वह हमारे राष्ट्रीय जीवन में एक ऐसा शून्य छोड़ जाते हैं जिसे कभी नहीं भरा जा सकता। हम कांग्रेस पार्टी में और भारत के लोग हमेशा इस बात पर गर्व और आभारी रहेंगे कि हमारे पास डॉ. मनमोहन सिंह जैसा नेता था, जिनका भारत की प्रगति और विकास में योगदान अतुलनीय है।

पूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के निधन से शोक की लहर

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर पूरा देश शोक में डूबा है। बस्ती में कांग्रेस पार्टी कार्यालय पर जिलाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र पाण्डेय एक शोकसभा आयोजित कर कांग्रेसियों ने उन्हे भावभीनी श्रद्धांजलि दिया। जिलाध्यक्ष ने कहा मनमोहन सिंह का निधन एक युग का अंत है। उनके निधन से न सिर्फ कांग्रेस बल्कि पूरा देश शोक मना रहा है। राजनीतिक जीवन में उन्होने भेदभाव नही किया।

डा. मनमोहन सिंह की सज्जनता, सौम्यता और निर्णय पर कायम रहने की प्रतिबद्धता भारतीय राजनीति के लिये प्रेरणा स्रोत रहेगी। उनके जाने से कांग्रेस पार्टी की अपूर्णनीय क्षति हुई है। मनमोहन सिंह भारत रत्न सम्मान के हकदार हैं। पूर्व विधायक अंबिका सिंह ने कहा आर्थिक उदारीकरण, रोजगार गारण्टी, आईटी उद्योग, टेलीकॉम सेक्टर, भारत अमेरिका परमाणु समझौता, गरीबी उन्मूलन तथा शिक्षा में सुधार हेतु उनके योगदान को सदियों तक याद किया जायेगा। पूर्व विधायक रामजियावन ने कहा डॉ. सिंह को उनकी ईमानदारी, सादगी, और नीतिगत दृढ़ता के लिए जाना जाता है और चिरकाल तक उनकी ख्याति कायम रहेगी।

प्रवक्ता मो. रफीक खां ने कहा कि मनमोहन सिंह के कार्यकाल में ही डिजिटल क्रांति का आगाज हुआ। देश उनके योगदान को याद कर रहा है। शोकसभा के उपरान्त पूर्व प्रधानमंत्री को कांग्रेसजनों ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी। मौके पर सूनील कुमार पाण्डेय, साधूसरन आर्य, पूर्व विधानसभा प्रत्याशी डा. आलोक रंजन वर्मा, कौशल त्रिपाठी, गंगा प्रसाद मिश्रा, बाबूराम सिंह, अशोक श्रीवास्तव, डीएन शास्त्री, गिरजेश पाल, अवधेश सिंह, रामबचन भारती, महेन्द्र श्रीवास्तव, अलीम अख्तर, शौकत अली, इजहार, मदनलाल, बालमुकुन्द मिश्रा, अशफाक आलम कुरेशी, सद्दाम हुसेन, अमित प्रताप सिंह, अभिषेक सिंह सूर्यवंशी, सुरेन्द्र सिंह, बृजेश पाण्डेय, अतीउल्लाह सिद्धीकी, सर्वेश शुक्ल, पूरन चौधरी आदि उपस्थित थे।

युगों तक याद किये जायेंगे डा. मनमोहन सिंह –बसन्त चौधरी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पूर्व लोकसभा प्रत्याशी बसन्त चौधरी ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त करते हुये कहा कि देश ने प्रमुख अर्थशास्त्री और युग दृष्टा खो दिया। दो बार प्रधानमंत्री रहने के बावजूद अहंकार उन्हें छू तक नहीं गया था। सादा जीवन उच्च विचार को उन्होने अपने जीवन में ढाला। उनकी नीतियों का ही परिणाम था कि देश में आर्थिक उदारीकरण का दौर शुरू हुआ और आज भारत की जो आर्थिक समृद्धि है उसकी जड़ों में मनमोहन जी की सोच है। कहा कि उन्होने कभी देश पर ऐसा टैक्स नहीं लादा जिससे लोगों को बोझ जैसा महसूस हो।

अपने पूर्व के मुलाकातों की स्मृतियों को साझा करते हुये कांग्रेस नेता बसन्त चौधरी ने कहा कि डा. मनमोहन सिंह ने वित्त मंत्री और प्रधानमंत्री के रूप में अनेकों बार भारत को संकटों से उबारा, जब दुनियां मंदी के दौर से गुजर रही थी उस समय भी भारत की अर्थ व्यवस्था को समृद्ध रखा। उनका योगदान देश सदैव याद रखेगा।

तीन साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म का आरोप

संवाददाता–बस्ती। कलवारी थानाक्षेत्र के एक गांव में साढ़े तीन वर्ष बच्ची संग गांव के ही तीन नाबालिक बच्चों पर दुष्कर्म करने का आरोप लगा है। पीड़ित बच्ची के परिजन जब उलाहना लेकर आरोपियों के घर पहुंचे तो घरवालों ने उन्हें पीटना शुरू कर दिया। पीड़ित परिवार की सूचना पर मौके पर डायल 112 की टीम पहुंची और मामले की जानकारी कलवारी थाने को दी। घटना की जानकारी मिलते ही थाना प्रभारी कलवारी जनार्दन प्रसाद पुलिस के साथ मौके पहुंचे और इसकी जानकारी उच्चधिकारियों को दी। सूचना पर देर रात एएसपी ओमप्रकाश सिंह, क्षेत्राधिकारी प्रदीप त्रिपाठी भी पहुंचकर घटना की जानकारी ली। पीड़ित परिवार के अनुसार बच्ची गांव में ही बने आंगनबाड़ी केंद्र पर खेलने गई थी, तभी गांव के तीन नाबालिग बच्चे वहां पहुंचे और बच्ची के साथ गलत हरकत करने लगे।

बच्ची के रोने की आवाज सुनकर और कुछ बच्चे वहां पहुंचे तो तीनों आरोपी मौके से भाग गए। बच्ची की स्थिति देखने के बाद पीड़ित परिवार उलाहना लेकर आरोपी बच्चों के घर गए जहां आरोपी के परिवार के लोगों ने उन्हें मारना पीटना शुरू कर दिया। इस बाबत क्षेत्राधिकारी प्रदीप त्रिपाठी ने बताया कि जानकारी मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची, घटनास्थल का निरीक्षण कर घटना की जांच की जा रही है। तहरीर मिलते ही पीड़ित बच्ची का मेडिकल करा कर मामले में विधिक कार्रवाई की जाएगी।

कमीशन के सवाल पर भड़के ओपी राजभर, कैमरे पर देने लगे गालियां

लखनऊ (आभा)। योगी सरकार में कैबिनेट मंत्री और सुभासपा के अध्यक्ष ओपी राजभर शुक्रवार को मीडिया के सवाल पर कैमरे के सामने ही इतना भड़क गए कि गालियां देने लगे। बेहद अश्लील गाली देते हुए जूता–जूता मारने की बात भी कही। योगी सरकार में कैबिनेट मंत्री और सुभासपा के अध्यक्ष ओपी राजभर शुक्रवार को मीडिया के सवाल पर कैमरे के सामने ही इतना भड़क गए कि गालियां देने लगे। बेहद अश्लील गाली देते हुए जूता–जूता मारने की बात भी कह दी। कैमरे के सामने ही इस तरह से एक मंत्री का गाली देना रिकॉर्ड हो गया और कुछ देर में ही वायरल भी हो गया। समाजवादी पार्टी की मीडिया सेल ने भी राजभर के गाली देते हुए वीडियो को पोस्ट कर योगी सरकार पर निशाना साधा है। सपा ने सरकार को यह भी याद दिला दिया कि राजभर पहले सीएम योगी को भी गाली देते थे। इनकी भाषा अभी तक सुधरी नहीं है।

योगी सरकार में अल्पसंख्यक समाज कल्याण मंत्री ओम प्रकाश राजभर शुक्रवार को गाजीपुर के सत्यदेव कॉलेज में कर्मवीर सत्यदेव सिंह की पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में शिरकत करने पहुंचे थे। यहां पर पत्रकारों ने गाजीपुर की सड़कों की गुणवत्ता पर सवाल किया तो राजभर भड़क गए। सड़कों की गुणवत्ता के एक सवाल पर उन्होंने कहा कि अगर आप कहते हैं कि सड़क ठीक नहीं बनी है तो फिर जांच की नौबत आती है। हम दिल्ली और लखनऊ से पैसा भेजते हैं, ताकि सड़क अच्छी बन जाये लोगों का आवागमन सुचारु रूप से हो। लेकिन अगर ठेकेदार उसे ठीक से नहीं बनाता तो फिर आप उसकी शिकायत हमसे करते हैं। शिकायत होगी तो जांच भी होगी। मीडिया ने जब पूछा कि ठेकेदार कहता है कि उसने मंत्री जी को भी पैसे दिए हैं? सवाल सुनते ही राजभर बुरी तरह भड़क गए। गाली देते हुए कहा कि बुला लाओ मेरे सामने। अगर कोई ठेकेदार कह दे कि ओमप्रकाश राजभर को पैसा दिया है तो मैं उसे जूता–जूता मारूंगा।

मोमेन्टम द्वारा प्रमुख स्थानों पर लगवाये गये अवैध विज्ञापनों को हटाये जाने की मांग

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । भारत एडवरटाइजर के प्रोपराइटर नोमान अहमद ने पुलिस अधीक्षक को पत्र देकर जनपद के प्रमुख चौराहों पर मोमेन्टम द्वारा व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के साथ ही अतिरिक्त आय अर्जित करने के उद्देश्य से यातायात पुलिस के लिए केबिन बनवाकर उस पर अपना व्यापक प्रचार किया जा रहा है, इसके लिए मोमेन्टम ने जिला प्रशासन से कोई अनुमति नहीं ली है।

प्रेस को जारी विज्ञप्ति के माध्यम से नोमान अहमद ने बताया कि पुलिस अधीक्षक से सूचना अधिकार अधिनियम के अर्न्तगत निर्धारित शुल्क का भुगतान करके इस सम्बन्ध में सूचना मागी गयी थी, जिसमें यातायात प्रभारी ने स्पष्ट किया है कि मोगेन्टम द्वारा अपने प्रचार प्रसार हेतु यातायात पुलिस के लिए बनवाई गयी केबिनों एवं उस पर लगाये गये प्रचार हेतु जनपदीय और प्रदेश मुख्यालय से कोई अनुमति प्रदान नहीं की गयी है, और न ही कोई सरकारी धन व्यय किया गया है।

नोमान अहमद ने बताया कि नगर पालिका सीमा क्षेत्र में होर्डिंग्स, यूनिपोल या अन्य माध्यमों से प्रचार प्रसार से जुड़ी फर्मों को नगर पालिका परिषद् बस्ती में प्रत्येक के लिए निर्धारित शुल्क जमा करने के उपरान्त स्थान का निर्धारण होता है, मोमेन्टम द्वारा बिना किसी अनुमति के शहर में यातायात पुलिस के लिए बिना विभागीय अनुमति, अनुबन्ध व किसी भी धनराशि का भुगतान किए बिना व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के उद्देश्य से अतिरिक्त आय अर्जित करने के उद्देश्य से बनवाई गयी केबिनों के साथ ही उनपर किये जा रहे प्रचार पूरी तरह अवैध है। इससे वैधानिक कारोबार प्रभावित हो रहा है, ऐसे में मोमेन्टम द्वारा लगवाये गये अवैध विज्ञापनों को हटवाया जाना आवश्यक है।

चरित्र निर्माण शिविर में संगीतमयी व्यायाम का प्रशिक्षण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । आर्य समाज बस्ती द्वारा बालिकाओं में सदाचार, संयम, अनुशासन और चरित्र निर्माण के उद्देश्य से चरित्र निर्माण शिविर स्वामी दयानंद विद्यालय सुरतीहट्टा बस्ती में चल रहा है, जिसमें बालिकाओं को प्रशिक्षिका श्रद्धा और सविता द्वारा सूर्य नमस्कार, दण्ड बैठक, आसन, प्राणायाम, जूडो कराटे, नानचक्र सहित संगीतमयी व्यायाम का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। बौद्धिक कक्षा में आचार्य योगेन्द्र मेधावी ने बताया कि शिविर में बच्चों को राष्ट्र प्रेम, बड़ों का आदर सम्मान करना एवं आपसी व्यवहार एवं वाणी का उचित एवं समयानुकूल प्रयोग के गुर भी सिखाए जा रहे हैं साथ ही सूचना प्रौद्योगिकी के युग में जहॉ हमें वैश्विक प्रतिस्पर्धा में स्थान बनाना हैं वहॉ अपने मूल सांस्कृतिक धरोहर को भी बचाकर रखने तरीके भी बताए जा रहे हैं लेकिन यह काम देश के संस्कारवान युवा शक्ति ही कर सकती हैं। यह कार्यक्रम सुप्त समाज को जगाने वाला शंखनाद है हमें इस नाद को और बुलन्द करना है जिससे समाज उन्नत बन सके। इस अवसर पर पधारे अतिथिद्वय श्री प्रकाश पाण्डेय जिला समाज कल्याण अधिकारी एवं डॉ वी के श्रीवास्तव आयुष विभाग

ने बताया कि व्यायाम और यज्ञ का सामंजस्य बच्चों को सकारत्मक सोच के साथ पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देगा और देश के प्रति निरन्तर समर्पण बनाए रखने में मदद करेगा। ओम प्रकाश आर्य प्रधान आर्य समाज नई बाजार बस्ती ने बताया कि बच्चों को उपरोक्त के अलावा ब्रह्मयज्ञ व देवयज्ञ का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है साथ ही भारतीय संस्कृति पर आधारित विभिन्न आध्यात्मिक एवं सामाजिक विषयों पर बौद्धिक सत्र भी रखा जाता है। दिनांक 29 दिसम्बर को प्रतियोगिता होगी एवं विजेता बालिकाओं को 30 दिसम्बर के समापन समारोह में सम्मानित किया जायेगा।

शिविर में, अलख निरंजन आर्य, रश्मि आर्य, गरुण ध्वज पाण्डेय, नितीश कुमार, अनूप कुमार त्रिपाठी, दिनेश कुमार, अरविन्द श्रीवास्तव, अनीशा मिश्रा, महक मिश्रा, शिवांगी गुप्ता, काजल सिंह आदि ने बच्चों को सीखने में सहयोग किया।

उद्यमियों के समस्या निस्तारण में शिथिलता क्षम्य नहीं

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । मण्डलीय उद्योग बन्धु समिति की बैठक मण्डलायुक्त अखिलेश सिंह की अध्यक्षता में आयुक्त सभागार में सम्पन्न हुयी। उन्होने मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार, ओडीओपी वित्त पोषण योजना से संबंधित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिया कि ऋण वितरण समय से करायें। उद्यमियों की समस्याओं का निराकरण करना सरकार की सर्वोच्य प्राथमिकताओं में एक है। इसमें किसी प्रकार की शिथिलता क्षम्य नही होंगी। उन्होने कहा कि निवेशमित्र पोर्टल पर प्राप्त आवेदनों को समयान्तर्गत संबंधित अधिकारी निस्तारित करें। जनपद बस्ती में औद्योगिक क्षेत्र में स्थायी जलनिकासी की समीक्षा करते हुए उन्होने सरयू नहर खण्ड–4 से संबंधित अधिकारीगण को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कहा कि जलनिकासी की समस्याओं से निजाद दिलायें।

जनपद संतकबीर नगर में औद्योगिक फिडर में अबाध विद्युत आपूर्ति के लिए उन्होने मुख्य अभियन्ता विद्युत को अपूर्ति हेतु निर्देशित किया है। बैठक में बताया गया कि औद्योगिक क्षेत्र संतकबीर नगर में कूडा डम्प किया जाता है, जिससे संक्रमण का खतरा बना रहता है। मण्डलायुक्त ने संबंधित अधिकारी को निर्देशित किया कि जमीन तलाश कर चिन्हित स्थान पर ही कूडा डम्पिंग कराना सुनिश्चित करें।

बैठक में उन्होने पाया कि ग्लोबल इनवेस्टर समिट फरवरी 2024 के अन्तर्गत जनपद बस्ती में 254 इकाईयों द्वारा रू. 14363.00 करोड़ का पूॅजीनिवेश एवं 19340 व्यक्तियों का रोजगार प्रस्तावित है। संतकबीर नगर में कुल 102 इकाईयों द्वारा रू. 4754.38 करोड़ का पूॅजीनिवेश एवं 12598 व्यक्तियों का रोजगार प्रस्तावित है। सिद्धार्थ नगर में कुल 245 इकाईयों द्वारा रू. 964.69 करोड़ का पूॅजीनिवेश एवं 6908 व्यक्तियों का रोजगार प्रस्तावित है।

बैठक का संचालन संयुक्त आयुक्त उद्योग हरीश प्रताप सिंह ने किया। बैठक में एएसपी ओम प्रकाश सिंह, जीएमडीआईसी बस्ती, संतकबीर नगर एवं सिद्धार्थनगर, लीड बैंक मैनेजर आर.एन. मौर्य, खादी ग्रामोद्योग अधिकारी पी.एन. सिंह, उपायुक्त राज्य कर प्रभाकर सरोज, चेम्बर्स आफ कामर्स के अध्यक्ष अशोक सिंह, अध्यक्ष उ0प्र0 इण्डस्ट्री एसोसिएशन अरविन्द पाठक, अनूप तिवारी व अंकित सिंह तथा विभागीय अधिकारीगण तथा उद्यमीगण उपस्थित रहें।

राजकीय इण्टर कालेज में प्रवक्ता बनी जूही

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा गुरुवार देर रात राजकीय इंटर कॉलेज प्रवक्ता भर्ती का परिणाम घोषित किया गया। जिसमें हर्रैया विकासखण्ड के समौड़ी गांव निवासी जूही मिश्रा का चयन वनस्पति विज्ञान प्रवक्ता के पद पर हुआ है। वर्तमान में वह बिहार राज्य में प्राथमिक शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं। जूही के पिता अशोक कुमार मिश्र, बड़े भाई रवीश कुमार मिश्र तथा भाभी अनुराधा मिश्रा उ.प्र. बेसिक शिक्षा परिषद में कार्यरत हैं। जूही की प्राथमिक से लेकर इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई हर्रैया में हुई है। जबकि बीएससी, एमएससी तथा बीएड की शिक्षा डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय से प्राप्त किया है। जूही ने इस सफलता का श्रेय अपने परिवार वालों को देते हुए कहा कि संघर्ष लंबा रहा लेकिन वह इस सफलता से काफी खुश हैं और आगे की पढ़ाई जारी रखते हुए सिविल सेवा में जाना चाहती हैं। परिवार के लोगों और शुभचिंतकों ने मिठाई खिलाकर जूही को बधाई दिया।

जूही की सफलता पर रामसुमति मिश्र, दुर्गा प्रसाद मिश्र, महेन्द्र कुमार मिश्र, सरोज मिश्रा, उर्मिला मिश्रा, मधू मिश्रा, प्रेम शंकर ओझा, मनीष पाण्डेय, विवेक कान्त पाण्डेय, राजेश पाठक, अभिषेक मिश्र, शिल्पी मिश्रा, नेहा मिश्रा, वेद प्रकाश मिश्र, गोलू, किशन, उत्तम, गोपाल, रौनक, अंकुर, रितिका, आद्यया आदि ने प्रसन्नता व्यक्त किया है।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 28 दिसम्बर 2024 शनिवार

सम्पादकीय

अब स्मृतियों में मनमोहन सिंह

देश के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह अब स्मृतियों में हैं। उन्होंने 92 वर्ष की उम्र में गुरुवार 26 दिसम्बर की रात्रि में अंतिम सांस ली। उन्होने देश को दिवालिया बनने से बचाने के लिये ऐसी नीतियां बनायी जिससे समृद्धि के रास्ते खुले और भारत की अर्थ व्यवस्था को मजबूती मिली। उनका योगदान सदैव याद किया जायेगा। अपने वित्त मंत्री और 10 वर्ष के प्रधानमंत्रित्व काल में डा. मनमोहन सिंह का योगदान भुलाया नहीं जा सकता। मनरेगा, सूचना का अधिकार, शिक्षा और भोजन का अधिकार देने सहित उन्होने अनेक पहल कर गरीब और मध्यम वर्ग के मार्ग सुगम किये।

उन्होंने सिर्फ पीएम ही नहीं, प्रमुख अर्थशास्त्री मनमोहन सिंह ने देश के वित्त मंत्री के रूप में भी अपनी सेवाएं दीं। भारत आज दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यस्था है और जल्द इसके पांचवीं सबसे बड़ी इकोनॉमी बनने की उम्मीद जाहिर की जा रही है. लेकिन 90 के दशक में हालात बिल्कुल विपरीत थी, उस समय देश में पीवी नरसिंह राव की सरकार थी और वित्त मंत्री दिवंगत डॉ मनमोहन सिंह थे। ग्लोबल मार्केट में भारत की स्थिति निचले स्तर पर पहुंच चुकी थी। इंडियन करेंसी अमेरिकी डॉलर के मुकाबले धराशायी हो गई थी और विदेशी मुद्रा भंडार लगभग खत्म हो चुका था, एक प्रकार से देश दिवालिया होने की कगार पर पहुंच गया था. लेकिन वित्त मंत्री ने देश के मिजाज को समझा और कुछ ऐसे फैसले लिए जिनसे भारत की वो तस्वीर ही बदल गई।

दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह साल 1991 से 1996 तक वित्त मंत्री रहे थे और इस दौरान उन्होंने भारी आर्थिक संकट की स्थिति में बड़े फैसले लेकर इकोनॉमी को संकट से निकाला था. इन कामों में पहला और सबसे बड़ा था श्लाइसेंस राजश को खत्म करना. उन्होंने ऐसी नीतियां बनाईं, जिनके जरिए भारत में विदेशी निवेश के लिए दरवाजे ओपन हो गई। लाइसेंसी राज को खत्म करके आर्थिक उदारीकरण के नए युग की शुरुआत का श्रेय दिवंगत मनमोहन सिंह को ही जाता है। आयात के लिए लाइसेंस को खत्म करना, ज्यादातर बिजनेस के लाभकारी रहा, क्योंकि उनके लिए कई तरह के लाइसेंस लेने की बाध्यता खत्म हो गई थी. इसके साथ ही विदेशी निवेश की सीमा बढ़ाई गई, जिससे भारत में तेजी से फॉरेन इन्वेस्टमेंट आने की शुरुआत हो गई. भारत में काम करने वाली कंपनियों को चुनौतियां तो मिलीं, लेकिन आज देश में जो विदेशी कंपनियों अपना बड़ा कारोबार कर रही हैं, वो मनमोहन सिंह की ही देन हैं. उन्होंने कॉर्पोरेट टैक्स से लेकर इंपोर्ट शुल्क में कटौती समेत अन्य कई बड़े कदम उस समय बढ़ाए थे।

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के बड़े फैसलों में अगला और अहम है अमेरिका के साथ भारत की न्यूक्लियर डील. 1974 में राजस्थान के पोखरण में देश के पहले परमाणु परीक्षण के बाद रिश्तों में तनाव देखने को मिला था. जब मनमोहन सिंह साल 2004 में प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने इन खराब हुए रिश्तों को सुधारने के लिए कदम आगे बढ़ाया. इस डील के लिए उन्हें यूपीए गठबंधन सरकार के सहयोगी लेफ्ट का कड़ा विरोध भी झेलना पड़ा, लेकिन उन्होंने भारत–अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते को आगे बढ़ाने का फैसला किया। आखिरकार अमेरिका से साथ ये ऐतिहासिक समझौता 2008 में हुआ. उस समय अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश थे। भारतीय में ऊर्जा सुरक्षा और कूटनीतिक संबंधों के लिए एक मील का पत्थर साबित हुई. इसके जरिए दशकों से भारत के लिए बंद परमाणु ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए अमेरिकी सहयोग का रास्ता फिर से ओपन हो गया।

मनमोहन सिंह के कार्यकाल के दौरान ही आधार कार्ड अस्तित्व में आया और ये दिवंगत पूर्व पीएम की सबसे बड़ी उपलब्धियों में एक बना. गौरतलब है कि आधार कार्ड आज के समय में हर भारतीय की न केवल पहचान बन गया है, बल्कि तमाम फाइनेंशियल कामों के लिए भी सबसे महत्वपूर्ण डॉक्युमेंट हो गया है. जनवरी 2009 में देश के निवासियों को विशिष्ट पहचान प्रदान करने, विभिन्न सेवाओं तक पहुंच को सुविधाजनक बनाने के लिए आधार कार्ड योजना की शुरुआत की गई थी।

मुफ्त की चुनावी घोषणाएं और अर्थव्यवस्था

— योगेन्द्र योगी—

दिल्ली चुनाव को अभी एक महीने से ज्यादा का समय बाकी है। उससे पहले दिल्ली की आम आदमी पार्टी ने महिला सम्मान योजना को मंजूरी दे दी। इस योजना के तहत महिलाओं के खाते में हर महीने 1000 रुपये आएंगे। आप के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि चुनाव के बाद इसको बदलकर 2100 रुपए करेंगे। चुनाव जीतने के लिए मुफ्त की रेवड़ी बांटने वाली आप अकेली पार्टी नहीं हैं। जब भी चुनाव नजदीक आते हैं, राजनीतिक दलों में खैरात बांटने की होड़ लग जाती है। इसका एकमात्र मकसद चुनाव जीतना है। इसके नुकसान–फायदों की राजनीतिक दलों का परवाह नहीं हैं। यह अलग बात है कि चाकू खरबूजे पर गिरे या खरबूजा चाकू पर, कटना तो खरबूजे को ही है। मसलन फ्री का माल लेने वाले को भी आखिरकार इसकी कीमत चुकानी पड़ती है। किसी न किसी रूप में टैक्स का बोझ उन पर भी पड़ता है। फ्री की योजनाओं का फायदा उठाने वाले भी इससे बढने वाली महंगाई की मार से बच नहीं सकते।

इससे पहले राजस्थान में विधानसभा चुनाव के दौरान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने वोटरों को फ्री में स्मार्टफोन और तीन साल के लिए फ्री इंटरनेट का वायदा किया था। गहलोत ने राज्य के हर परिवार को हर महीने 100 यूनिट तक फ्री बिजली फ्री देने का ऐलान किया था। मध्य प्रदेश में पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कांग्रेस की सरकार बनने पर हर परिवार को 100 यूनिट तक फ्री बिजली देने का वादा किया। तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लाडली बहना योजना के तहत सवा करोड़ गरीब महिलाओं के खाते में एक हजार रुपये जमा कराए। कांग्रेस ने वादा किया था कि उसकी सरकार आई तो हजार नहीं बल्कि 1,500 रुपये दिए जाएंगे। शिवराज ने युवाओं को लुभाने के लिए 12वीं कक्षा के कुल 9000 टॉपर्स को एक–एक स्कूटी देने का भी ऐलान किया था। चुनावी रेवड़ी बांटना का कल्चर शुरु से ही विवादों से घिरा रहा है। सुप्रीम कोर्ट, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, आर्थिक विशेषज्ञ, चुनाव आयोग और मौजूदा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तक इस पर चिंता जता चुके हैं। कोई भी राजनीतिक दल व्यापक देशहित से जुड़े ऐसे मुद्दों का समाधान तलाशना तो दूर बल्कि चर्चा तक करना नहीं चाहता। सुप्रीम कोर्ट ने मुफ्त राशन और अन्य मुफ्त योजनाओं पर गंभीर सवाल उठाए हैं।

कोर्ट ने केंद्र सरकार से पूछा कि आखिर लोगों को फ्री की रेवड़ी कब तक बांटी जाएगी। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस मनमोहन की बेंच ने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान मुफ्त राशन देना समय की जरूरत थी, लेकिन अब रोजगार और आत्मनिर्भरता पर ध्यान केंद्रित करने का समय आ गया है। चुनावई के दौरान केंद्र सरकार ने कोर्ट को बताया कि देश के 81 करोड़ लोगों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत मुफ्त या सब्सिडी वाला राशन दिया जा रहा है। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने हैरानी जताई और सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता व अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी से कहा, ष्तो मतलब सिर्फ टैक्सपेयर्स ही ऐसे लोग हैं जिन्हें मुफ्त राशन नहीं मिल रहा है। यह स्थिति गंभीर विचार का विषय है।ष वर्ष २०२२ में श्रीलंका का आर्थिक संकट सामने आया तो इसने दुनियाभर की सरकारों को चेता दिया। सर्वदलीय बैठक में विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा था कि श्रीलंका से सबक लेते हुए हमें मुफ्त के कल्चर से बचना चाहिए। जयशंकर ने कहा कि श्रीलंका जैसी स्थिति भारत में नहीं हो सकती, लेकिन वहां से आने वाला सबक बहुत मजबूत है। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी एक रैली में रेवड़ी कल्चर पर सवाल उठाए थे। पीएम मोदी ने कहा था कि आजकल हमारे देश में मुफ्त की रेवड़ी बांटकर वोट बटोरने का कल्चर लाने की भरसक कोशिश हो रही है। ये रेवड़ी कल्चर देश के विकास के लिए बहुत घातक है। रेवड़ी कल्चर वालों को लगता है कि जनता जनार्दन को मुफ्त की रेवड़ी बांटकर उन्हें खरीद लेंगे। मोदी ने कहा था कि हमें मिलकर रेवड़ी कल्चर को देश की राजनीति से हटाना है।

भारत में ऐसी लुभावनी पर आर्थिक तौर पर घातक चुनावी वायदों की शुरुआत तमिलनाडु से मानी जाती है। वर्ष 2006 में तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव में डीएमके ने सरकार बनने पर सभी परिवारों को फ्री कलर टीवी देने का वादा किया। डीएमके के इस चुनावी वादे को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई। हालांकि, डीएमके जीत गई। वादा पूरा करने के लिए 750 करोड़ रुपये का बजट लगाया गया। मामला सुप्रीम कोर्ट में चल ही रहा था कि 2011 के विधानसभा चुनाव में विपक्षी अन्नाद्रमुक ने टीवी के जवाब में मिक्सर ग्राइंडर, इलेक्ट्रिक फैन, लैपटॉप, कम्प्यूटर, सोने की थाली आदि बांटने का वादा कर दिया। शादी होने पर महिलाओं को 50 हजार रुपये और राशन कार्ड धारकों को 20 किलो चावल देने का वादा भी किया।

नतीजे आए तो अन्नाद्रमुक की सरकार बन गई। 2006 के चुनावी वादे पर जुलाई 2013 में सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि फ्रीबीज सभी लोगों को प्रभावित करती है, जो स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव की जड़ को काफी हद तक हिला देती हैं। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को भी आदेश दिया कि वो सभी राजनीतिक पार्टियों से सलाह–मशविरा कर एक आचार संहिता बनाए। इसके बाद 2015 में चुनाव आयोग ने राजनीतिक पार्टियों और उम्मीदवारों के लिए आचार संहिता जारी भी की, लेकिन उसके बावजूद चुनावों में फ्रीबीज का ऐलान होता ही रहा है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने कहा था, ऐसी योजनाएं जिनसे क्रेडिट कल्चर कमजोर हो, सब्सिडी की वजह से कीमतें बिगड़ें, प्राइवेट इन्वेस्टमेंट में गिरावट आए और लेबर फोर्स भागीदारी कम हो तो वो फ्रीबीज होती हैं। वर्ष 2022 पिछले साल आरबीआई की भी एक रिपोर्ट आई थी। इसमें कहा गया था कि राज्य सरकारें मुफ्त की योजनाओं पर जमकर खर्च कर रही हैं, जिससे वो कर्ज के जाल में फंसती जा रही हैं। स्टेट फाइनेंसेस रू ए रिस्क एनालिसिस नाम से आई आरबीआई की इस रिपोर्ट में उन पांच राज्यों के नाम दिए गए हैं, जिनकी स्थिति बिगड़ रही है। इनमें पंजाब, राजस्थान, बिहार, केरल और पश्चिम बंगाल शामिल थे। चुनावी वादों के कारण बढ़ रही मुद्रास्फीती और महंगाई की मार आम लोगों पर पड़ रही है। बेरोजगारी बढ़ रही है। राजनीतिक दलों का इससे सरोकार नहीं है। सत्ता में आने के बाद सरकारें फ्री देने के वादे पूरा करने के लिए टैक्स का बोझ बढ़ाती जा रही हैं। होना तो यह चाहिए कि कोई राजनीतिक दल जब ऐसी मुफ्त की चुनावी घोषणाओं का ऐलान करे तो साथ ही यह भी बताए कि इसके लिए धन का इंतजाम कैसे किया जाएगा। मसलन इसके एवज में करदाताओं पर कितना बोझ पड़ेगा। जब तक हिसाब–किताब पारदर्शी नहीं होगा तब तक ऐसी योजनाओं देश पर बोझ साबित होती रहेंगी।

विश्व युद्ध की आशंका के बादल

—संजीव ठाकुर—

अमेरिकी पूर्व राष्ट्रपति जो बायडेन जाते–जाते भी यूक्रेन को सामरिक तथा आर्थिक मदद का पैकेज देकर रूस के खिलाफ विश्व युद्ध की चिंगारी को भड़काकर जा रहे हैं। डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिका के दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद भी रूस यूक्रेन और इसराइल हमास युद्ध रुकने के आसार नजर नहीं आ रहे हैं। रूस यूक्रेन युद्ध को 2 वर्ष से अधिक समय हो चुका है वहीं इसराइल हमास और फिलिस्तीन युद्ध को भी एक वर्ष से अधिक हो चुका है। अमेरिका यूरोपीय देश यूक्रेन की आर्थिक तथा सामरिक मदद करके विश्व युद्ध की आशंका को बने हुए हैं। इसके अलावा भी यह देश यूक्रेन को रूस के खिलाफ लगातार भड़काते आ रहे हैं और यही वजह है की विश्व युद्ध की भीषण विभीषिका से इनकार नहीं किया जा सकता है। अमेरिकी विदेश मंत्री एंथोनी ब्लिंकन ने संयुक्त राष्ट्र संघ की सभा में स्पष्ट रूप से कहा है कि इस सभा में सबको विदित है कि तो कुख्यात आतंकवादी संगठन हमास ,हिजबुल्ला और फलस्तीन इस्लामिक जिहाद को कई वर्षों से ईरान प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से आर्थिक सामरिक सहायता कर इजराइल का विरोध करवाता आ रहा है. ब्लिंकन ने कहा हमास के इसराइल पर हमले में अमेरिका पूरी तरह से इसराइल के साथ खड़ा है और वह किसी अन्य देश के हमले से इजरायल की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध है हमास का आक्रमण इजरायल की प्रभु सत्ता को चुनौती देने वाला है इसलिए इसराइल को हमास पर आक्रमण करने का पूरा–पूरा वैधानिक हक है इजरायल को अपनी जनता तथा अपनी भूमि की रक्षा करने का पूरा अधिकार है इसराइल अपना कर्तव्य निभा रहा हैस लिंकन ने स्पष्ट कहा है यदि ईरान, जॉर्डन, सीरिया या लेबनान अमेरिकी सैनिकों पर हमला करेगा तो उसका तुरंत माकूल जवाब दिया जाएगास इधर ईरान के प्रमुख आयतुल्लाह खुमैनी ने कहा कि गाजा पट्टी में निर्दोष नागरिकों तथा बच्चों महिलाओं की हत्या का सारा दोष अमेरिका प्रशासन को जाता है जिसने इसराइल को गाजा पट्टी पर निर्दोष नागरिकों पर आक्रमण करने की खुली छूट देकर रखी है और यदि अमेरिका इस युद्ध में शामिल होता है तो खाड़ी के अनेक राष्ट्र शामिल होंगे जिसकी सारी जिम्मेदारी अमेरिका पर होगी। यह बात पूरी दुनिया को मालूम है कि हमास के पीछे ईरान और मिडिल ईस्ट के कई देश शामिल हैं और ईरान के पीछे ड्रैगन तथा रूस का खुला समर्थन है। चीन और रूस ने फिलिस्तीन तथा हमास को अपने समर्थन का ऐलान किया है. रूस चाहता है कि अमेरिका का ध्यान रूस यूक्रेन युद्ध से हट जाए और वह यूक्रेन को पूरी तरह नष्ट कर अपने देश की सीमा में शामिल कर ले। इसी तरह की चाहत चीन ने भी पाल कर रखी है वह ताइवान के मामले में अमेरिकी हस्तक्षेप से परेशान है और वह चाहता है कि अमेरिका का ध्यान इसराइल हमास युद्ध में लगा रहे और वह इसी दौरान आक्रमण करके ताइवान को अपनी प्रभु सत्ता में शामिल कर लेस चीन और रूस में खुले तौर पर ईरान को भड़काकर हमास हिज्बुल्लाह और फिलिस्तीन इस्लामी जिहाद को सहायता करने तथा आक्रमण करने की इजाजत दे दी थी तब जाकर ईरान ने हमास को सीधे–सीधे इसराइल पर आक्रमण करने का निर्देश भी दिया हैस 7 अक्टूबर 23 को हमास के आक्रमण से लगभग 1200 से 1500 इसराइली नागरिक सैन्य अधिकारी बच्चे तथा स्त्रियों की सरेआम हत्या कर दी गई। जवाब में इजायल ने फिलिस्तीन के गाजा पट्टी पर हमला कर हमास के फ्रंटलाइन आतंकवादियों को खत्म कर दिया है कॉलेटरल डैमेज के रूप में वहां के नागरिक तथा बच्चों एवं स्त्रियां भी मौत की नींद सो चुके हैंस हमास इसराइल लड़ाई में नया मोड़ तब आया जब गाजा के एक अस्पताल में बम गिरकर 500 लोगों की हत्या कर दी गई और इसका सारा ठीकरा इसराइल के सर फोड़ दिया गया है इसराइल ने इस बात से साफ इनकार किया है और कहा है कि इसके पीछे खुद हमास एवं फिलिस्तीन इस्लामी जिहाद है जिसने गाजा के इस अस्पताल में हमला कर इसराइल के खिलाफ एक नया षड्यंत्र रचा है। इस हमले से क्रुद्ध होकर खाड़ी देशों के सभी मुस्लिम राष्ट्र जिनकी संख्या लगभग 57 है सब एक हो गए हैं और इजरायल के साथ लगभग 87 देश समर्थन में जुड़ गए हैं जिसमें प्रमुख तौर पर अमेरिका ,ब्रिटेन, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया,कनाडा एवं अन्य देश जिसमें भारत भी शामिल है का इसराइल को समर्थन है। अब मुख्य मुद्दा यह है कि हमास द्वारा 200 नागरिकों को बंधक बना लिया है जिनको वह मुक्त करने के मूड में नहीं दिखाई दे रहा है इजराइल का लगातार आक्रमण कर यह दबाव है कि पहले वह बंधकों को इसराइल के हवाले करें फिर इसराइल अपना आक्रमण रोकेगा।अब इजरायल की थल सेना भी आक्रमण करने पूरी तरह सक्षम एवं तैयार है ऐसी स्थिति में पूरी गाजा पट्टी संपूर्ण तबाह हो जाएगी और लगभग 20 लाख फिलिस्तीन निवासी नागरिक शरणार्थी बन चुके और बेघर भी हो चुके हैं। ईरान ने हमास को इसराइल पर आक्रमण के आदेश देने के समय तक यह नहीं सोचा था की स्थिति यहां तक बिगड़ जाएगी। चीन रूस जरूर ईरान के साथ हैं पर यह जरूरी नहीं है कि इसराइल और हमास की युद्ध से पैदा होने वाले विश्व युद्ध में वे ईरान और खाड़ी देशों का कितना साथ दे पाएंगे। भारत को भी हमास इजरायल युद्ध से चौकन्ना रहने की आवश्यकता होगी क्योंकि हमारा पड़ोसी पाकिस्तान भी हमास जैसे आतंकवादियों को बना देने का कई वर्षों से मुजरिम है और वह कभी भी आतंकवादियों के माध्यम से भारत में हमला कर सकता है तथा भारत को अपनी सीमा पर चौकसी बढ़ा देना चाहिए। इसके अलावा भारत ने अपनी नीति स्पष्ट करके रखी है, उसने हमास के आतंकवादियों का विरोध किया है पर फिलिस्तीन देश का वह कई वर्षों से समर्थन करता आया है और 38 टन मदद की रसद तथा दवाइयां उसने गाजा पट्टी पर भिजवाई भी है। भारत का दृष्टिकोण मानवतावादी है।

फुटपाथों और सड़कों पर अतिक्रमण

—प्रियंका सौरभ—

मुख्य बाजारों, चौक–चौराहों, गलियों में दुकानदारों और रेहड़ी–फड़ी वालों की ओर से किया गया अतिक्रमण दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है। परिणामस्वरूप शहर के बाजारों में वाहन चलाना तो दूर पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। स्ट्रीट वेंडर्स, जो अपने जीवनयापन के लिए अपने व्यापार पर निर्भर हैं, ने हर एक व्यस्त बाजार के पास निर्दिष्ट नो–वेंडिंग जोन पर अतिक्रमण कर लिया है, जिससे यातायात बाधित हो रहा है और स्थानीय दुकानदारों की ओर से शिकायतें आ रही हैं। सार्वजनिक व्यवस्था, निष्पक्ष व्यावसायिक प्रथाओं और विक्रेताओं की आर्थिक कमजोरी के बीच संतुलन बनाना एक नैतिक और प्रशासनिक चुनौती है। स्ट्रीट वेंडर दुनिया भर की शहरी अर्थव्यवस्थाओं का एक अभिन्न अंग हैं, जो सार्वजनिक स्थानों पर कई तरह की वस्तुओं और सेवाओं तक आसान पहुँच प्रदान करते हैं। भले ही स्ट्रीट वेंडर्स को अनौपचारिक माना जाता है, लेकिन वे शहरी अर्थव्यवस्थाओं में महत्त्वपूर्ण योगदानकर्ता हैं। इस 21वीं सदी में जयादातर लोग स्ट्रीट वेंडर हैं। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था निगरानी अध्ययन ने उन तरीकों का खुलासा किया है, जिनसे स्ट्रीट वेंडर अपने समुदायों को मजबूत बना रहे हैंरू स्ट्रीट वेंडिंग रोजगार सृजन, उत्पादन और आय सर्जन में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। स्ट्रीट वेंडर्स को कार्यस्थल पर जनता, पुलिस कर्मियों, राजनेताओं और स्थानीय उपद्रवियों से कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति जीवनयापन के लिए वेंडिंग पर निर्भर हैं। विक्रेताओं द्वारा की गई प्रतिस्पर्धा और भीड़भाड़ के कारण नुकसान का दावा करना उनकी मजबूरी है। व्यस्त बाजार में यातायात का सुचारू प्रवाह और सार्वजनिक सुरक्षा की आवश्यकता भी जरूरी है। विक्रेताओं के लिए मानवीय और टिकाऊ समाधान की वकालत सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने और न्यायसंगत शासन सुनिश्चित करने का कार्य है। स्ट्रीट वेंडर अपने परिवार का भरण–पोषण करने के लिए वेंडिंग पर निर्भर हैं। हालाँकि, उनकी उपस्थिति से भीड़भाड़ होती है और सार्वजनिक व्यवस्था बाधित होती है। ट्रैफिक प्रवाह और सार्वजनिक सुरक्षा बनाए रखते हुए उनकी आजीविका की रक्षा के लिए एक संतुलन की आवश्यकता है। दुकानदार विक्रेताओं को उनकी कम लागत और अनौपचारिक संचालन के कारण अनुचित प्रतिस्पर्धा के रूप में देखते हैं। हालाँकि, विक्रेता अक्सर आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों से सम्बंधित होते हैं। समाधान में समानता की रक्षा करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दुकानदारों के हितों को अनुचित रूप से नुकसान न पहुँचाया जाए। जबकि आर्थिक विकास एक संपन्न शहर के लिए महत्त्वपूर्ण है, सामाजिक कल्याण नीतियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि स्ट्रीट वेंडर जैसे कमजोर समूहों को असंगत कठिनाई का सामना न करना पड़े। निष्पक्ष और न्यायपूर्ण नीतियों में आर्थिक विकास और हाशिए पर पड़े समुदायों के कल्याण दोनों को एकीकृत किया जाना चाहिए। कई विक्रेता अपने परिवारों के लिए कमाने वाले होते हैं, जो बुजुर्ग आश्रितों और स्कूल जाने वाले बच्चों का भरण–पोषण करते हैं। बिना किसी विकल्प के उन्हें विस्थापित करने से उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थितियाँ खराब हो सकती हैं, जिससे निर्णय लेने में करुणा आवश्यक हो जाती है। निर्णय पारदर्शी और समावेशी होने चाहिए, जिसमें सभी हितधारकों की चिंताओं का समाधान हो। किसी भी समूह को बाहर रखने से अशांति फैल सकती है और प्रशासन की निष्पक्ष रूप से शासन करने की क्षमता पर भरोसा कम हो सकता है।

शहरों की आबादी समय के साथ लगातार बढ़ती जा रही है। इसके चलते वाहनों की संख्या भी बढ़ रही है और रोजगार के लिए लोगों का बाहर आने का सिलसिला भी बढ़ता जा रहा है लेकिन शहरों में इन समस्याओं का निदान करने के लिए प्रशासनिक स्तर पर जो पहल होनी चाहिए थी, वह नहीं हो पाई है। अतिक्रमण के खिलाफ चलाए गए अभियान के बाद शहरों में पार्किंग और रेडी–फड़ी जोन बनाए जाने की बात सामने आती है, लेकिन वह आज तक जमीन पर दिखाई नहीं देती है। लिहाजा ऐसी समस्याओं का बना रहना स्वाभाविक है। इसके स्थायी समाधान के लिए नो–वेंडिंग जोन में समय–आधारित वेंडिंग शेड्यूल लागू करें ताकि ट्रैफिक प्रवाह को बनाए रखते हुए गैर–पीक घंटों के दौरान विक्रेताओं को अनुमति दी जा सके। सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करने और भीड़भाड़ को कम करने के लिए पीक घंटों के दौरान निगरानी बढ़ाएँ। स्वच्छता और पीने के पानी जैसी आवश्यक सुविधाओं के साथ एक निर्दिष्ट वेंडिंग जोन विकसित करें, यह सुनिश्चित करते हुए कि विक्रेताओं के पास काम करने के लिए एक स्थायी स्थान हो। विक्रेताओं की संख्या को विनियमित करने और भीड़भाड़ को रोकने के लिए एक लाइसेंसिंग प्रणाली शुरू करें। यह दृष्टिकोण विक्रेताओं और दुकानदारों की तत्काल जरूरतों को सम्बोधित करता है और साथ ही भविष्य के लिए एक स्थायी ढाँचा तैयार करता है। यह सार्वजनिक व्यवस्था, आर्थिक निष्पक्षता और दयालु शासन को संतुलित करता है, यह सुनिश्चित करता है कि सभी हितधारकों को सुना और समर्थन दिया जाए। स्ट्रीट वेंडर्स, दुकानदारों और जनता की जरूरतों को सम्बोधित करने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो आर्थिक और सामाजिक कल्याण दोनों पर ध्यान केंद्रित करता है। पीएम स्वनिधि योजना जैसे सरकारी कार्यक्रम वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं जबकि स्ट्रीट वेंडर्स एक्ट, 2014 उनके अधिकारों की रक्षा करता है। भविष्य में, कौशल विकास की पेशकश, अधिक वेंडिंग जोन बनाने और डिजिटल प्लेटफॉर्म को बढ़ावा देने से विक्रेताओं को शहर की अर्थव्यवस्था में फलने–फूलने और एकीकृत होने में मदद मिलेगी।

बेकाबू होकर पलटी सवारियों से भरी निजी बस, मची चीख पुकार, शीशा तोड़कर निकाले गए यात्री

संवाददाता—गोण्डा। सवारियां लेकर गौराचौकी जा रही एक निजी बस के मनकापुर पीलखाना बाईपास के सपीप पटलने से शुक्रवार दोपहर चीख—पुकार मच गई। वहां पहुंचे ग्रामीणों ने बस का शीशा तोड़कर किसी तरह से यात्रियों को बाहर निकाला। इसमें करीब 22 यात्री सवार थे। वहीं हादसे में चोटिल दो लोगों को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी है।

यात्रियों ने बताया कि शुक्रवार दोहर करीब एक बजे आरपी स्कूल—पीलखाना बाईपास मार्ग पर एक निजी कॉलेज के पास बेकाबू निजी बस अचानक पलट गई। प्रत्यक्षदर्शी शिक्षक अब्दुल वहीद ने बताया कि घटना के वक्त बस में करीब 22 यात्री सवार थे। गोंडा से गौरा चौकी जा रहे थे।

बस के बेकाबू होने के दौरान पीछे से आ रहे बाइक सवार सहम गए। वहीं, यात्री कुछ समझ पाते, इससे पहले बस पलटती चली गई। इस दौरान बस में चीख—पुकार मच गई। वहां पहुंचे राहगीरों व ग्रामीणों की मदद से यात्रियों को शीशा तोड़कर बाहर निकाला गया।

वहीं, चालक और परिचालक वहां से भाग गए। इस हादसे में दो यात्री चोटिल हुए हैं। उन्हें एंबुलेंस की मदद से सीएचसी भिजवाया गया। जहां डॉ. आलोक चौधरी ने बताया कि मामूली रूप से चोटिल जमीरुल (60) निवासी मनकापुर व मूलचंद (70) निवासी वजीरगंज को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई है।

कोतवाल मनोज पाठक ने बताया कि क्षतिग्रस्त निजी बस को कब्जे में लिया गया है। प्रथमदृष्टया बेकाबू बस के पुलिया से टकराने के बाद हादसे की आशंका जताई जा रही है। पुलिस मामले की गंभीरता से छानबीन कर रही है।

पूर्व प्रधानमंत्री के निधन पर व्यक्त की शोक संवेदना

संवाददाता—श्रावस्ती। पूर्व प्रधानमंत्री सरदार मनमोहन सिंह के निधन पर देश व प्रदेशभर में शोक की लहर है। जगह जगह शोक सभाएं आयोजित कर उनके लिए शोक संवेदनाएं व्यक्त की जा रही है। इकौना में भी शोकसभा का आयोजन कर वकीलों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। तहसील अधिवक्ता संघ इकौना में संघ अध्यक्ष पवन कुमार मिश्रा के नेतृत्व में शुक्रवार को अधिवक्ता सभागार में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें अधिवक्ताओं ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की। संघ अध्यक्ष ने कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री का जाना देश के लिए क्षति है। वह महान अर्थशास्त्री थे। जिन्होंने अपने कार्यकाल में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम लागू की, ग्रामीण भारत के गरीब परिवारों को 100 दिनों का गारंटी रोजगार योजना प्रदान किया। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी कम करने में मदद मिली। उन्होंने कहा कि उनके निधन से राष्ट्र ने एक महत्वपूर्ण राजनेता, प्रख्यात अर्थशास्त्री और एक प्रतिष्ठित नेता खो दिया है। इस मौके पर महामंत्री श्रीधर द्विवेदी, रामकुमार शुक्ला, एके सिंह, पाटेश्वरी मिश्रा, विजय श्रीवास्तव, वंशराज शुक्ला, विजय कुमार पांडेय, विष्णु कुमार गुप्ता, उदय राज पांडेय, सुरेंद्र मिश्रा, नितिन श्रीवास्तव, सुमित कुमार मिश्रा, केके श्रीवास्तव, हुकुमचंद त्रिपाठी, ओमप्रकाश पाठक आदि अधिवक्ता मौजूद रहे।

अवैध बालू खनन ने ली मजदूर की जान

संवाददाता—कुशीनगर। हनुमानगंज थाना क्षेत्र के ग्राम पनियहवा चौराहे के समीप बीती रात अवैध बालू खनन कर भाग रहे ट्रैक्टर ट्राली के नीचे कुचल कर एक 20 वर्षीय युवक की मौत हो गई। जबकि दो लोग गम्भीर रुप से घायल हो गए। घायलों को एम्बुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तुर्कहा भर्ती कराया गया। जहां उनकी हालत गम्भीर देख उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। पूरी घटना बगल में लगे सी सी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई है। इसमें दिख रहा है कि युवक खुद ही ट्रैक्टर ट्राली से कूदा था और उसी ट्रैक्टर की चपेट में आ गया था। मौके पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। गाड़ी के नीचे दबकर युवक की मौत होने की सूचना मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया।

हनुमानगंज थाना के पनियहवा पुल के समीप काफी दिनों से रात के अंधेरे में अवैध बालू खनन का खेल चल रहा है। लोगों के अनुसार बीती रात अवैध बालू खनन होने की शिकायत पर तहसील प्रशासन ने पनियहवा के समीप छापेमारी की। अवैध बालू लदी एक गाड़ी लेकर चालक पनियहवा की तरफ भागने लगा। इसी दौरान गाड़ी पर बैठा पनियहवा के पथलेश्वर नाथ मोहल्ला निवासी भीम निषाद 20 वर्ष पुत्र स्व बंगाली निषाद, महेंद्र 30 वर्ष पुत्र छेदी व मुरारी 26 वर्ष पुत्र ध्रुव तीनों पकड़े जाने के भय से चलती गाड़ी से नीचे कूद गए। जिसमें भीम निषाद उसी ट्राली के नीचे आ गया। ट्राली के नीचे कुचलकर उसकी मौत हो गई। जबकि महेन्द्र व मुरारी गम्भीर रुप से घायल हो गए। हादसे के बाद चालक गाड़ी लेकर भाग गया। घटना की सूचना मिलते ही हनुमानगंज एसओ ओमप्रकाश तिवारी मयफोर्स मौके पर पहुंच गये। घायलों को एम्बुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तुर्कहा भेजवाते हुए शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। उधर भीम के टैक्टर ट्राली के नीचे दबकर मौत हो जाने की सूचना मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया है। पनियहवा चौराहे पर लगे सीसीटीवी कैमरे में पूरी घटना रिकॉर्ड हो गई है। रिकॉर्डिंग सामने आने के बाद अवैध बालू कारोबारी मामले को मैनेज कराने में जुटे हुए है। इस सम्बन्ध में थानाध्यक्ष ओमप्रकाश तिवारी का कहना है कि किसी अज्ञात वाहन से दबकर पनियहवा में भीम निषाद की मौत हुई है। पुलिस अज्ञात वाहन की तलाश कर रही है।

इंडो नेपाल बॉर्डर व तुलसीपुर चीनी मिल का छात्रों ने किया अध्ययन

संवाददाता—बलरामपुर। शिक्षा क्षेत्र श्रीदत्तगंज के कंपोजिट स्कूल विशंभरपुर में राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के तहत एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण कराया गया। जिसमें 28 छात्रों की टोली को बलरामपुर चीनी मिल यूनिट तुलसीपुर के साथ इंडो नेपाल बॉर्डर से जुड़े जंगल का भ्रमण कराया गया। प्रधानाध्यापक सकत राम ने शैक्षिक भ्रमण टीम को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। विद्यालय टीम शिक्षकों के साथ तुलसीपुर चीनी मिल पहुंचकर वहां के सहायक प्रबंधक आशीष सिंह से मुलाकात की। उन्होंने तकनीकी टीम को चीनी मिल का भ्रमण करने का निर्देश दिया। छात्रों ने बड़ी—बड़ी मशीन व गन्ने से बनने वाले उत्पादों के बारे में विस्तार से जानकारी ली। इसके बाद टीम जरवा होकर इंडो नेपाल बॉर्डर पहुंची। बॉर्डर पर एसएसबी जवानों से बच्चों ने सरहद संबंधी विभिन्न मुद्दों को साझा करते हुए उनसे जानकारी हासिल की। शिक्षक व छात्र बॉर्डर पर जांच कराकर कोयला बास जंगल, झील, झरना व पहाड़ देखकर काफी खुश हुए। प्रधानाध्यापक सकत राम ने बच्चों को बॉर्डर से जुड़े स्थलों के साथ पहाड़ पर औषधीय पौधों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। भ्रमण टीम में अध्यापक सुनीता पांडेय, नीलम पांडेय, रीना वर्मा, शिवचरण लाल, सतीश चंद्र आदि शिक्षकों की टीम ने प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर बच्चों से पहाड़ झरना झील आदि पर विभिन्न बिंदुओं को साझा किया।

पुलिस की कार्यशैली से रूबरू हुए स्कूली बच्चे

संवाददाता—श्रावस्ती। विभिन्न स्कूल के बच्चों को थानों का शैक्षिक भ्रमण कराया गया। जहां छात्र—छात्राओं को पुलिस की कार्यशैली के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। बच्चों की जिज्ञासा का पुलिसकर्मियों ने बड़ी सहजता से जवाब दिया। गिलौला के नेहरू इंटर कॉलेज के छात्र छात्राओं को गिलौला थाने का भ्रमण कराया गया। इसी तरह लार्ड कृष्णा आदर्श इण्टर कालेज हरदत्तनगर गिरण्ट के छात्रों ने गिरंट थाने का, बुद्धा इण्टर कालेज श्रावस्ती के बच्चों ने श्रावस्ती थाने का, चौधरी महाजनलाल गौरव पब्लिक इण्टर कालेज के बच्चों को थाना मल्हीपुर का भ्रमण कराया गया। वहीं अलक्षेन्द्र इण्टर कालेज भिनगा के बच्चों ने कोतवाली भिनगा का व जगतजीत इण्टर कालेज इकौना के छात्र छात्राओं ने इकौना थाने का भ्रमण किया। भ्रमण करने पहुंचे छात्रों को थाना प्रभारियों की ओर से पुलिस संबंधी कार्यों के बारे में जानकारी दी गयी व परिसर का भ्रमण कराया गया।

थानों में स्थपित सीसीटीएनएस साफ्टवेयर के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही ऑनलाइन एफआईआर व आईजीआरएस पोर्टल पर कार्य करने की प्रक्रिया को समझाया गया। थाना प्रभारी कार्यालय, थाना कार्यालय, साइबर हेल्प डेस्क, महिला हेल्प डेस्क, पुरुष बंदी गृह, महिला बंदी गृह, मलखाना कार्यालय, आरक्षी भोजनालय व आवासीय व्यवस्था, शस्त्र व शस्त्रागार, वायरलेस सिस्टम, आपराधिक रजिस्टर को प्रत्यक्ष रूप से दिखाते हुए पूर्ण जानकारी प्रदान की गई। हेल्पलाइन नंबर 1090, 1076, 112 व साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 आदि के बारे में भी बताया गया। भ्रमण का मुख्य उद्देश्य स्कूली बच्चों व पुलिस के बीच समन्वय स्थापित करना है। इसके तहत निर्धारित कार्यक्रमों का आयोजन करके बच्चों में कानून की जानकारी व उनमें टीम भावना विकसित की जाये व बच्चों को जीवन में अनुशासन एवं स्वानुशासन के महत्व के बारे में जानकारी प्रदान करना है।

पुलिस कर्मियों के साथ एसपी ने लगाई तीन किमी तक दौड़

संवाददाता—कुशीनगर। शुक्रवार को सुबह पुलिस लाइन में परेड का निरीक्षण करने पहुंचे पुलिस अधीक्षक कुशीनगर संतोष कुमार मिश्रा ने पुलिस कर्मियों के साथ तीन किमी तक दौड़ लगाई। इसके बाद खुद भी सभी पुलिस कर्मियों के साथ पुश अप और अन्य शारीरिक व्यायाम किया। परेड के दौरान उन्होंने पुलिसकर्मियों के टर्नआउट को भी चेक किया।

एसपी ने परेड के दौरान अनुशासन व एकरूपता के लिए टोलीवार ड्रिल कराई। परेड के दौरान समस्त थानें, यातायात कार्यालय व पुलिस ऑफिस के विभिन्न कार्यालयों से निरीक्षक, दरोगा, प्रशिक्षु दरोगा, हवलदार, सिपाही सहित कुल 324 लोग उपस्थित रहे।

इसके बाद एसपी ने पीआरवी—112 के वाहनों को चेक किया। विभिन्न थाना अन्तर्गत संचालित कुल 10 पीआरवी वाहन सहित कुल 44 कर्मचारीगण परेड में उपस्थित रहे। सभी को आदेशित किया कि सायरन व पीए सिस्टम एवं लाईट चालू हालत में हो सुनिश्चित करें। उपकरणों के रख रखाव व उपकरणों से घटनास्थल पर क्राइम सीन की रुपरेखा तैयार कर क्राइम सीन प्रोटेक्शन के बारे में भी बताया। रिस्पॉन्स टाइम सही रखने हेतु सख्त हिदायत दी। पुलिस लाइन के आदेश कक्ष में सभी गार्द रजिस्टरों को चेक करते हुए संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

परेड के दौरान क्षेत्राधिकारी कसया कुंदन सिंह, क्षेत्राधिकारी लाइन उमेश चन्द भट्ट, प्रतिसार निरीक्षक व प्रभारी डायल—112, पीआरओ कुशीनगर सहित अन्य अधिकारी कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

बच्चों की रंगारंग प्रस्तुतियों को अतिथियों ने सराहा

संवाददाता—बहराइच। शहर के मोहल्ला बड़ीहाट में संचालित केयर इंग्लिश स्कूल में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। नन्हें—मुन्हे बच्चों की ओर से रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। जिसको देखकर अतिथियों ने तालिया बजाकर उनका उत्साह बढ़ाया। विद्यालय की चेयर पर्सन सुषमा दोसांज ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रम बच्चों के सर्वांगीण विकास ही एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। विद्यालय की चेयरपर्सन, प्रिंसिपल नीलमणी ने ज्ञान देवी मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कहा कि शैक्षिक मूल्यांकन तो समय—समय पर बच्चों का हो रहा है, लेकिन सांस्कृतिक कार्यक्रम बच्चों के अनुशासन, संयम व व्यवहारिक ज्ञान को दर्शाता है। बच्चों की ओर से सोशल मीडिया एक्ट ,जय हिंद की सेना ,रानी लक्ष्मी बाई एक्ट सांग आरम्भ है प्रचंड है ,पांच राज्यों का सांग विविध रंग , प्री नर्सरी के बच्चों द्वारा यमला पगला गीत पर खूबसूरत प्रस्तुति देकर लोगों की तालियां बटोरी। संध्या श्रीवास्तव, निशी गोयल, मीनाक्षी दत्त मौजूद रहे।

यात्रियों को सुरक्षित करने को किया गया अभ्यास

संवाददाता—श्रावस्ती। आगामी महाकुंभ मेले में किसी भी प्रकार की घटना के दौरान यात्रियों को सुरक्षा प्रदान के लिए अभ्यास कराया गया। अभ्यास के दौरान भगदड़ जैसे हालात से निपटने के तरीके बताए गए। साथ ही अन्य प्रकार से सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने आदि की जानकारी प्रदान की गई। प्रयागराज में आगामी 13 जनवरी से महाकुंभ मेला शुरू हो रहा है। श्रावस्ती से मेले के लिए प्रस्थान करने वाले यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से शुक्रवार को बस स्टैण्ड भिनगा पर मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। जिसमें पुलिस कर्मियों को अभ्यास कराया गया। इस दौरान पुलिस विभाग ने संभावित भगदड़ व अन्य आकस्मिक घटनाओं से निपटने के लिए वहां उपस्थित नागरिकों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए पूर्वाभ्यास किया। स्वास्थ्य विभाग ने अस्थायी रैन बसेरा स्थापित किया, जिसमें हेल्पडेस्क, एम्बुलेंस और पैरामेडिकल टीम की तैनाती की गई। अभ्यास के दौरान यह सुनिश्चित किया गया कि किसी भी आपात स्थिति में तत्काल प्राथमिक उपचार उपलब्ध कराया जा सके। अग्निशमन विभाग ने कुंभ में जाने वाली बसों में यात्रियों की ओर से गैस सिलेंडर जैसे प्रतिबंधित वस्तुओं के संभावित परिवहन को ध्यान में रखते हुए आगजनी, आपदा प्रबंधन और आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने का पूर्वाभ्यास किया। इस समन्वित अभ्यास का मुख्य उद्देश्य महाकुंभ मेले के दौरान यात्रियों की सुरक्षा, आपात स्थितियों से त्वरित निपटान और यात्रियों को आवश्यक सुविधाओं का सुगमता से उपलब्ध कराना है।

घर में घुसकर लाखों के जेवरात उठा ले गए चोर

संवाददाता—गोण्डा। कोतवाली देहात क्षेत्र के सरायजरगर ग्राम पंचायत के सहियापुर में गुरुवार की रात चोर घर में घुस कर लाखों के जेवरात उठा ले गए। शुक्रवार सुबह घरवाले जगे तो घर का सामान बिखरा हुआ था। बताया जा रहा है कि पीड़ित परिवार बरामदे में सो रहा था और चोर घर में दाखिल हो गए। खोरहंसा चौकी पुलिस को घटना की सूचना दी गई है। पीड़िता जगपता पत्नी राम अनुज ने चौकी खोरहंसा में घर में चोरी की सूचना दी है। तहरीर में लिखा है कि उनके घर से चोर तीन करधन, तीन जोड़ी सोने की झुमकी, दो जोड़ी पाजेब, एक मांग का टीका, हाथ मेंहदी व बिछुआ चोर उठा ले गये। घटना की सूचना पर हरकत में आई पुलिस ने मौके का मुआयना किया है। पुलिस का कहना है कि जांच के बाद अग्रिम कार्रवाई की जाएगी। उधर,चोरी की घटना के बाद क्षेत्र में पुलिस की सक्रियता पर लोग सवालिया निशान लगा रहे हैं।

चार घंटे में ही टूट गया सरयू पंप का साइफन, माइनरों में जलापूर्ति ठप

संवाददाता—बहराइच। लंबे समय से नहरों में पानी का इंतजार कर रहे किसानों को एक बार फिर व्यवस्था का खामियाजा भुगतना पड़ा है। पहले रेलवे पुल निर्माण की वजह से पलेवा के समय पानी का संकट पैदा रहा है, अब गेहूं व अन्य फसलों की पहली सिंचाई के सामने नहरों में पानी नहीं पहुंचा है। चार घंटे पानी चलने के बाद सरयू पंप का साइफन टूट जाने से ठप पड़ा है। किसान नहरों में उपलब्ध पानी को पंपिंग सेट से फसलों को सिंचाई करने को विवश हो रहे हैं। नेपाल सीमा से लगे नवाबगंज ब्लॉक क्षेत्र में 50 फीसद किसानों के सामने सिंचाई का संकट पैदा हो गया है। ये किसान फसलों की सिंचाई के लिए चौधरी चरण सिंह सरयू नहर पर निर्भर हैं। काफी दिनों से नहर में पानी नहीं चालू किया गया है। पहले नानपारा क्षेत्र में अमान परिवर्तन को लेकर नहर के पास पुल निर्माण की वजह से पानी नहीं छोड़ा गया। अब जब पुल का कार्य पूरा हो गया है तो सरयू नहर पंप का साइफन ही टूट गया है। किसानों का कहना है कि पहले ही दिन पांच किलोमीटर तक ही नहर व माइनर में पानी पहुंचा था कि खराबी की वजह से पंप ठप हो गया है। कई दिन बीतने के बाद भी पंप के साइफन की मरम्मत नहीं हो सकी है। जबकि गेहूं की सिंचाई का पीक समय चल रहा है। ऐसे में जिन किसानों के पास निजी संसाधन उपलब्ध हैं। उसकी मदद से फसलों की सिंचाई करने में लगे हुए हैं।

किसानों का कहना है कि सिंचाई से कई माह पहले ही माइनर व रजबहा की सफाई का कार्य शुरू हो जाता है, ताकि निर्बाध पानी नहरों से निकलकर किसानों के खेतों तक पहुंच जाए, लेकिन टूटे साइफन की जानकारी होने के बावजूद समय रहते उसकी मरम्मत नहीं कराई गई थी, जिसकी वजह से लक्ष्मणपुर माइनर, वर्दा माइनर,साहबा रजबहा, परमपुर माइनर में पानी पूरी तरह से चालू नहीं हो पाया है। किसान जगत राम ने बताया कि पंप बंद होने से नहर टूट गई है। तली में बचे हुए पानी से ही किसी तरह फसल बचाने की जुगत कर रहे हैं। मोबीन खान, प्रभारी, सरयू नहर पंप ने कहा कि साइफन टूट जाने की वजह से नहर में पानी नहीं छोड़ा जा रहा है। दो दिन में साइफन का मरम्मत कार्य पूरा होने पर पंप चालू कर दिया जाएगा।

वकील को जान से मारने की धमकी पर मुकदमा दर्ज

संवाददाता—बलरामपुर। अधिवक्ता संघ उतरौला की पहल पर एक सभासद के पति के खिलाफ पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया है। जिसको लेकर पुलिस ने मामले की विवेचना शुरू कर दी है। अधिवक्ता आशीष कसौधन ने तहरीर देकर आरोप लगाया कि बीते पांच दिसम्बर को एमन रिजवी ने सोशल मीडिया पर वकील पर अपमान जनक टिप्पणी की थी। इससे वकील को काफी अपमानित होना पड़ा है। उन्होंने तहरीर में आरोपी पर वकील को जान से मारने की धमकी देने का भी आरोप लगाया है। इस घटना पर वकील आशीष कसौधन ने अधिवक्ता संघ उतरौला को दी। इस पर अधिवक्ता संघ उतरौला अध्यक्ष प्रहलाद यादव के नेतृत्व में तमाम अधिवक्ताओं ने समाधान दिवस पर एडीएम व एएसपी को लिखित तहरीर देते हुए दोषी आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज करते हुए वकील के जान माल की सुरक्षा की मांग की है। अधिवक्ता संघ उतरौला की पहल पर उतरौला पुलिस ने आरोपी एमन रिजवी के खिलाफ कई धाराओं में मुकदमा दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है।

स्तुति व आस्था का राष्ट्रीय स्तर पर चयन

संवाददाता—श्रावस्ती। राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस की परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने पर जिले की दो छात्राओं को राष्ट्रीय स्तर पर चयन हुआ। जिनके सम्मान में विद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विधायक व एसडीएम ने दोनों छात्राओं को सम्मानित किया। राष्ट्रीय स्तर की बाल विज्ञान कांग्रेस परीक्षा संस्कार भारती पब्लिक स्कूल मिर्जापुर में हुई थी। जिसमें इकौना के कैम्पस मार्टियस एकेडमी स्कूल की छात्रा स्तुति श्रीवास्तव व आस्था श्रीवास्तव का राष्ट्रीय स्तर पर चयन हुआ। जिनके सम्मान में शुक्रवार को कैम्पस मार्टियर एकेडमी स्कूल इकौना में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रावस्ती विधायक राम फेरन पांडेय व विशिष्ट अतिथि इकौना एसडीएम ओम प्रकाश रहे। विधायक ने चयनित छात्राओं को प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया और उनका उत्सवर्धन किया। विधायक ने कहा कि राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का मुख्य उद्देश्य बच्चों को राष्ट्रीय भविष्य के प्रति सार्थक सपने संजोने व उन्हें साकार करने के लिए प्रोत्साहित करना है। राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस कोई प्रतियोगिता नहीं, बल्कि परस्पर सीखने सिखाने की एक प्रक्रिया है। एसडीएम ने कहा कि प्रतियोगिताओं में बच्चे संपूर्ण प्रक्रिया को लिपिबद्ध व उसे निर्णयकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। इन संपूर्ण क्रिया कलापों के माध्यम से वह अपनी संकल्प भावनाओं एवं विचारों को साकार स्वरूप प्रदान करने की व्यावहारिक विधि से अवगत होते हैं। गाइड शिक्षक संतोष कुमार पांडेय ने बताया कि बच्चों ने अपने प्रस्तुति में फसल अवशिष्ट पदार्थों का उपयोग पर अपने प्रोजेक्ट तैयार किए। उन्होंने बताया कि चयनित छात्राएं छह जनवरी 2025 को भोपाल में अपना प्रोजेक्ट प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभाग करेंगी।

उत्तर प्रदेश ग्रामीण लीग का हुआ शुभारंभ

संवाददाता—बलरामपुर। मो. यूसुफ उस्मानी इंटर कॉलेज मैदान में शुक्रवार को युवा कल्याण एवं प्रान्तीय रक्षक दल विभाग की ओर से उत्तर प्रदेश ग्रामीण लीग का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि नपाप अध्यक्ष प्रतिनिधि अनूप चन्द गुप्त ने फीता काटकर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। उन्होंने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते हुए उनका उत्साहवर्धन कर मनोबल बढ़ाते हुए खिलाड़ियों को अच्छे प्रदर्शन करने की शुभकामना दी। इस अवसर पर नीरज कुमार गुप्त, फणीन्द्र गुप्त, ओम प्रकाश गुप्त, ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि महिपाल चौधरी, विजय पाल वर्मा, सतीश गुप्ता, नरग अध्यक्ष सीबी माथुर व अंकुर गुप्ता समेत दर्जनों लोग मौजूद रहे।

अंडरपास बनाने को लेकर ग्रामीणों का प्रदर्शन

संवाददाता—बहराइच। बहराइच—गोंडा रेलप्रखंड पर अमान परिवर्तन कार्य पूरा हो चुका है। अब लाइन चौड़ीकरण को देखते हुए चित्तौरा ब्लॉक के चार गांवों के ग्रामीण परेशान हैं। ग्रामीणों का कहना है कि रेलवे अंडरपास न बनने से उन लोगों को कई किलोमीटर अतिरिक्त दूरी तय कर गांव पहुंचना होगा। इसी समस्या से परेशान दर्जनों ग्रामीणों ने शुक्रवार को कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन कर नाराजगी जताई। डीएम को संबोधित ज्ञापन सौंपकर रेलवे से समन्वय कर समस्या दूर कराने की मांग की है।

चित्तौरा ब्लॉक के ग्राम पंचायत सलारपुर के मजरा घोसियाना, लोहनपुरवा, नयापुरवा, पुरबियनपुरवा, खालेपुरवा, पट्टापुरवा और ककरही शामिल हैं। गांव में दो प्राथमिक विद्यालय संचालित है। इस समय ग्राम पंचायत की ओर से रेलवे पटरी चौड़ीकरण का कार्य कराया जा रहा है। ऐसे में ककरही में अंडर पास का निर्माण नहीं हुआ तो लोगों को चार किलोमीटर की अतिरिक्त दूरी तय कर अपने गंतव्य की ओर जाना पड़ेगा। इसको देखते शुक्रवार को ग्राम प्रधान जयचंद पाल की अगुवाई में सैकड़ों ग्रामीण कलेक्ट्रेट पहुंचे। सभी ने ककरही में रेलवे अंडर पास निर्माण की मांग करते हुए प्रदर्शन किया।गीता देवी, तेज नारायन, मालती देवी, अंजू देवी, सूर्यभान, प्रियंका, प्रेम कुमार, कृष्णानंद, अदल चौहान मौजूद रहे।

नेपाली महिला तस्कर को एसएसबी ने दबोचा

संवाददाता—बहराइच। नेपाल से चरस की डिलीवरी देने भारतीय क्षेत्र में आ रही नेपाली महिला तस्कर को बार्डर पर गश्त कर रहे एसएसबी जवानों ने दबोच लिया। डॉग स्क्वायड के संदिग्ध वस्तु होने की पुष्टि पर महिला जवानों ने तलाशी लिया। कमर पर 2.03 किलोग्राम चरस बरामद किया गया। पूछताछ के बाद पुलिस को सौंप दिया गया। पुलिस ने मादक पदार्थ अधिनियम के तहत मुकदमा दर्जकर आरोपित महिला को जेल भेज दिया है।एसएसबी के कार्यवाहक कमांडेंट राम रंजन ने बताया कि गुरुवार रात को डिप्टी कमांडेंट दिलीप कुमार की अगुवाई में जवान भारत—नेपाल सीमा पर गश्त कर रहे थे। पेट्रोलिंग के दौरान एक महिला नेपाल से भारतीय सीमा में प्रवेश करती दिखी। रूपईडीहा चौकी पर महिला की जांच की गई तो जांच मशीन ने आवाज करते हुए कुछ संदिग्ध होने की जानकारी दी। डॉग स्क्वायड ने भी नशीला पदार्थ होने की सूचना दी। जिस पर एसएसबी के महिला जवानों ने तलाशी ली तो महिला के कमर में चरस बंधा मिला। चरस दो किलो 300 ग्राम महिला किसी तस्कर को भारतीय क्षेत्र में देने आ रही थी। उप कमांडेंट दिलीप कुमार ने बताया कि तलाशी के दौरान महिला की पहचान नेपाल के जिला रोलपा के वार्ड नंबर तीन के घरती गांव निवासी मनमाली घरती पत्नी बहादुर घरती के रूप में हुई। एसएसबी और पुलिस जवान महिला को थाने लेकर आए।

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय—श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) सदर महोदय फैजाबाद

मूल वाद सं. 241/2023

मो0 हारून आदि

बनाम

रूस्तम अली आदि

बनाम—1— रूस्तम अली वल्द असगर अली 2— विवेक सोनी पुत्र छोटेलाल सोनी 3— गुलशन कुमार चौरसिया पुत्र रविन्द्रनाथ चौरसिया निवासीगण मौजा— जलालुद्दीन नगर परगना हवेली अवध तहसील सदर जनपद — अयोध्या

तारीख पेशी 06—02—2025

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्शित करने के लिये 2025 के माह 02 के 6 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुदिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय—श्रीमान रेजीडेन्ट मजिस्ट्रेट महोदय अयोध्या

कम्यूटर वाद सं.

टी. 20240423010 0292

नसीम खां आदि

बनाम

हुमेरा खातून आदि

बनाम—1— हुमेरा खातून पत्नी मोहम्मद कयूम निवासी ग्राम— उछाह पाली पूरे शेरपुर परगना पश्चिम राठ तहसील मिल्कीपुर जनपद — अयोध्या 2— श्रीमती प्रेमावती पत्नी त्रिमोहन निवासी ग्राम— महुलारा परगना पश्चिम राठ तहसील मिल्कीपुर जनपद — अयोध्या

तारीख पेशी 03—01—2025

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्शित करने के लिये 2025 के माह 01 के 3 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुदिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी। — द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय—श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) सदर महोदय फैजाबाद

मूल वाद सं. 1313/2023

गया प्रसाद

बनाम

सुशील कुमार

बनाम—1— सुशील कुमार पुत्र दूधनाथ निवासी ग्राम— समेसा परगना अमसिन तहसील सदर जनपद — अयोध्या

तारीख पेशी 06—02—2025

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्शित करने के लिये 2025 के माह 02 के 6 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुदिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय—श्रीमान बन्दोबस्त अधिकारी चकबंदी महोदय अयोध्या अपील अर्न्तगत धारा 11 (1) चकबंदी अधिनियम

राम अवध आदि

बनाम

सन्तराम

बनाम—1— सन्तराम ओझा पुत्र सूर्यदत्त ओझा निवासी ग्राम मजीरुद्दीनपुर वर्तमान निवासी ग्राम— कौढेला परगना पश्चिम राठ तहसील बीकापुर जनपद— अयोध्या

तारीख पेशी 30—12—2024

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्शित करने के लिये 2024 के माह 12 के 30 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुदिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(प्रपत्र सं0—3)

न्यायालय— श्रीमान कुटुम्ब न्यायाधीश महोदय फैजाबाद

याचिका सं0 255/2023

धारा—19 हिन्दू दत्तक भरण पोषण अधिनियम

प्रीत पाण्डेय

बनाम

जनकराम

प्रत्यर्थी

जनकराम पाण्डेय पुत्र शोभाराम निवासी इस्माइलनगर सिहोरा थाना—रौनाही जनपद— अयोध्या

सेवा में

चूंकि ऊपर निमिकत याची ने आपके विरुद्ध जैसा याचिका में दिया गया है। एक याचिका संस्थित की है।

(याचिका संलग्नक है)

आपसे इस सम्मतन के आपको तामील होने के दिनांक से तीन सप्ताह के भीतर इस न्यायालय में स्वयं हाजिर होने या न्यायालय की अनुमति वकालतनामा दाखिल करने की अपेक्षा की जाती है।

और चूंकि वाद को निवेश के लिए 01 दिवस माह 01 सन् 2025 का न्यायाधीश के कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

आपको एतद्द्वारा याची के दावे का उत्तर देने के लिए उक्त 01 दिवस 01 माह सन् 2025 को न्यायाधीश के समक्ष पूर्वान्ह 11 बजे उपस्थित होने के लिए सम्मन किया गया है। और सूचना दी जाती है पूर्व उल्लिखित दिनांक को पक्षों को जो उपस्थित हो सुनने के पश्चात् न्यायाधीश द्वारा कुटुम्ब न्यायालय के परामर्शदाता के समक्ष सुनवाई के दिनांक के सम्बन्ध में और याचिका से सम्बन्धित अन्य मामलों में निर्देश दिये जायेंगे और अग्रेसर सूचना दी जाती है वकालतनामा दाखिल करने या आप उपस्थित में असफल रहते है तो याचिका को उसी दिन या किसी भी अनुवर्ती दिवस को अप्रतिवाकि के रूप में बोर्ड के समक्ष रखा जायेगा और आपके विरूद्ध पारित किसी डिक्री या आदेश के लिए आप उत्तरदायी होंगे।

साक्षी.........प्रधान न्यायाधीश.......

..........पूर्वोक्त, आज...........दिवस माह 24.............

मुहरकर्ता

.........................दिवस.........

माह 24.........

याची/याची के अधिवक्ता

पदाभिहित अधिकारी

हस्ताक्षर

कुटुम्ब न्यायाधीश

फैजाबाद

पिकअप पर फायरिंग कर 2.67 लाख की लूट

संवाददाता–गोरखपुर। हाइवे पर गुरुवार की देर रात को सफारी सवार बदमशों ने लूट की बड़ी घटना को अंजाम दिया। क्षेत्र के सीहापार के आगे पिकअप पर फायरिंग कर कर गाड़ी रोक ली और पोल्ट्री फर्म के मालिक आदित्य उर्फ वैभव शुक्ला से 2.67 लाख रुपए लूट कर भाग गए। 112 नंबर की सूचना पर पुलिस जांच पड़ताल शुरू की लेकिन सीमा विवाद में उलझी रही।

बस्ती जनपद के चौनपुरवा निवासी आदित्य उर्फ वैभव शुक्ला आदित्य पोल्ट्री फर्म के नाम से मुर्गा का कारोबार करते है। कुशीनगर जनपद के हाटा कस्बा में मुर्गा पहुंचाने के लिए गुरुवार को पिकअप संख्या यूपी 51 सीटी 1115 से चालक सूरज, श्रमिक शंभू को साथ लेकर निकले। मुर्गा की आपूर्ति करने के बाद क्षेत्र में वसूली करके देर शाम को बस्ती जाने के लिए निकले। गोरखपुर लखनऊ हाइवे पर सहजनवां थाना क्षेत्र के सीहापार के आगे आमी नदी पुल पर पहुंचे ही थी कि एक सफारी गाड़ी ओवर टेक कर आगे बढ़ी और उसमें सवार लोग पिकअप पर फायरिंग करने लगे। एक गोली लगने पर चालक ने गाड़ी ने पिकअप रोक दिया।

सफारी सवार बदमाश नीचे उतर कर पिकअप के पास आए और गाली देने लगे। साथ ही असलहा लगाकर वैभव के पास बैग में रखा 2.67 लाख रुपए लूट कर बस्ती के तरफ भाग गए। लूट से परेशान कारोबारी ने 112 पर सूचना दी, जिसपर पुलिस मौके पर पहुंची। सहजनवां पुलिस ने मामला संतकबीर नगर जनपद के खलीलाबाद क्षेत्र में होने के दावा कर वापस लौट गई। कुछ देर पर एसपी नार्थ जितेंद्र श्रीवास्तव सीओ गीडा रत्नेश्वर सिंह के साथ मौके पर पहुंच जांच किए। इसके बाद खलीलाबाद पुलिस भी मौके पर पहुंची लेकिन केस नहीं दर्ज किया गया है। सीओ गीडा रत्नेश्वर सिंह ने कहा कि सीडीआर निकाला जा रहा है। जल्द ही केस दर्ज किया जाएगा।

गुरुवार की रात करीब सवा ग्यारह बजे के आसपास लूट की बड़ी घटना के बाद पीड़ित आदित्य बदहवास हो गए। सहजनवां पुलिस के टालू रवैया के कारण बस्ती अपने घर चले गए। इसके बाद फिर सक्रिय हुई खलीलाबाद पुलिस ने पीड़ित कारोबारी के घर जाकर फिर घटना स्थल पर लेकर गई और जांच पड़ताल की।

पीड़ित कारोबारी वैभव शुक्ला का दावा है कि अक्सर कारोबारी के लिए आसपास के जिलों में आना जाना होता है। साथ वसूली कर देर रात लौटना होता है। गुरुवार की रात गीडा क्षेत्र के कालेसर जीरो प्वाइंट पहुंचने पर ही सफारी सवार बदमाश पीछा करने लगे। हाइवे पर कई बार ओवर टेक कर गाड़ी रोकने की कोशिश किए लेकिन सफल नहीं होने पर फायरिंग शुरू कर दी।

किसानों को जरूरत से ज्यादा बेची खाद, आठ दुकानों के लाइसेंस निलंबित

संवाददाता–संतकबीरनगर। संतकबीरनगर जिले में जनपद में बीज एवं उर्वरक प्रतिष्ठानों पर बीज–खाद की गुणवत्ता सुनिश्चित करने व कालाबाजारी रोकने के लिए कृषि विभाग ने छापा मारा। इस दौरान 14 से 44 बोरी तक एक किसान को खाद की बिक्री करने वाली आठ दुकानों के लाइसेंस निलंबित कर दिए गए। इन पर उर्वरक का व्यवसाय करने पर रोक लगा दी गई। इसके अलावा पांच उर्वरक विक्रेताओं ने किसानों को निर्धारित मानक से 13 बोरी तक अधिक यूरिया बेची है। ऐसे दुकानदारों को नोटिस जारी कर मानक से अधिक बिक्री करने पर जवाब तलब किया है। उचित जवाब न मिलने पर निलम्बन की कार्रवाई की जाएगी। जिला कृषि अधिकारी ने बताया कि रबी सीजन में जनपद की मुख्य फसल गेहूं है जो लगभग 97 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में अच्छादित है। एक हेक्टेयर गेंहू की फसल के लिए अधिकतम सात बोरी यूरिया की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि निरीक्षण के दौरान आठ दुकानदारों द्वारा पीओएस मशीन से एक ही किसान को उनकी खतौनी के अनुसार निर्धारित मात्रा से अधिक मात्रा में यूरिया बिक्री करने के मामले पकड़ में आए हैं।

इन दुकानों के खिलाफ कार्रवाई कर लाइसेंस निलंबित कर दिया गया। इस अवधि में उर्वरक के व्यवसाय करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इन दुकानदारों द्वारा एक किसान को 14 से 44 बोरी तक बिक्री की गई। इन विक्रेताओं में डीसीएफ बेलहारा, गुप्ता खाद भंडार सिसई माफी, जनता खाद भंडार चंद्र कला देवापुर, चौधरी कृषि सेवा केंद्र बनकटवा चौराहा, डीसीएफ लोहरौली, एग्री जंक्शन बड़गो खलीलाबाद, एग्री जंक्शन महुली, चन्द्रपाल यादव खाद भंडार नैना झाला शामिल हैं। इसके अलावा पांच दुकानदारों द्वारा पीओएस मशीन से 10 से 13 बोरी यूरिया की बिक्री की है।

ज्यादा यूरिया देने पर कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। इनमें यादव ट्रेडर्स तिघरा बघौली, साधन सहकारी समिति शनिचरा बाजार, इफको बाजार मूड़ा डीहा पौली, डीसीएफ मानपुर सिकटहा, आर एन ट्रेडर्स बरदहिया बाजार खलीलाबाद शामिल हैं। इन सभी से स्पष्टीकरण मांगा गया है, जवाब न देने पर लाइसेंस निरस्त कर दिया जाएगा।

मनमोहन ने गोरखपुर में रामगढ़झील को दी थी 124 करोड़ की सौगात

संवाददाता–गोरखपुर। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन की सूचना पर कांग्रेसी मर्माहत हैं। पुराने कांग्रेसी उनके साथ गुजारे गए लम्हों को याद कर गमगीन हैं। पूर्वांचल के बड़े मुद्दों को लेकर वे हमेशा संजीदा दिखते थे। उन्हीं के प्रधानमंत्रित्व काल में एक अप्रैल 2010 में रामगढ़झील को राष्ट्रीय झील सरंक्षण योजना में शामिल किया गया और झील के जीर्णोद्धार के लिए 124 करोड़ रुपये जारी हुए थे। प्रदेश कांग्रेस के उपाध्यक्ष विश्वविजय सिंह बताते हैं कि पूर्वांचल के बड़े मुद्दों को लेकर पूर्व प्रधानमंत्री की संजीदगी साफ दिखती थी। इंसेफेलाइटिस से बच्चों की मौत को देखते हुए उन्होंने तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री गुलाम नबी आजाद को गोरखपुर भेजा था। तब उन्होंने सर्किट हाउस में एम्स की संभावना पर अधिकारियों के साथ चर्चा की थी। विश्वविजय बताते हैं कि आमी के प्रदूषण का मुद्दा उनके संज्ञान में आया तो उन्होंने वर्ष 2011 में तत्कालीन वन और पर्यावरण मंत्री को आमी नदी की स्थिति जानने के लिए गोरखपुर भेजा। इसके बाद ही केन्द्रीय प्रदूषण बोर्ड की टीम गोरखपुर पहुंची थी। टीम ने अपनी रिपोर्ट में पहली बार आमी के प्रदूषण को स्वीकारा था।

मनमोहन गोरखपुर के साथ ही पूर्वांचल में कांग्रेस की स्थिति को लेकर हमेशा चिंतित रहते थे। वे वर्ष 2007 में हुए यूपी विधानसभा चुनाव में गोरखपुर सदर सीट से कांग्रेस प्रत्याशी सिद्धार्थ प्रिय श्रीवास्तव के चुनाव प्रचार में गोरखपुर आए थे। एयरपोर्ट पर पहुंचे मनमोहन सिंह ने सबसे पहले पूर्व सांसद हरिकेश बहादुर से पूर्वांचल में कांग्रेस की स्थिति पर अलग से वार्ता की थी। मनमोहन सिंह की पूर्वोत्तर रेलवे से सैयद मोदी स्टेडियम में जनसभा हुई थी। करीब 20 मिनट के अपने संबोधन में आरोप–प्रत्यारोप के इतर अपनी सरकार की उपलब्धियों पर चर्चा की थी। पूर्व सांसद हरिकेश बहादुर और तत्कालीन प्रदेश कांग्रेस मंत्री डॉ.सैयद जमाल एयरपोर्ट पर स्वागत करने पहुंचे थे। हरिकेश बहादुर चंद मिनटों की मुलाकात को याद करते हुए बताते हैं कि एयरपोर्ट पर उतरने के बाद वह मुझे किनारे लेकर गए। गोरखपुर के साथ ही पूर्वांचल में कांग्रेस की स्थिति को लेकर जानकारी ली। उन्हें बताया था कि कांग्रेस की स्थिति अभी अच्छी नहीं है।

वरिष्ठ कांग्रेसी नेता डॉ.सैयद जमाल कहते हैं कि प्रधानमंत्री रहते हुए भी उनकी सौम्यता के सभी कायल हुए थे। माल्यार्पण के समय एक–एक कांग्रेस के पदाधिकारी से कुशमक्षेम पूछा था। उनकी सादगी और आर्थिक समझ को देश कभी नहीं भूल सकता है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता तौकीर आलम कहते हैं कि सैयद मोदी स्टेडियम में करीब दर्जन भर नेताओं ने उनका माल्यार्पण किया था। उन्होंने एक–एक पदाधिकारी से कांग्रेस की मजबूती के लिए काम करने की अपील की थी।

सूर्य कुमारी बालिका इण्टर कॉलेज में खेलकूद प्रतियोगिता शुरू

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

नगर बाजार (बस्ती)। नगर पंचायत नगर बाजार स्थित श्रीमती सूर्य कुमारी बालिका इंटर कॉलेज नगर में छात्रा खेलकूद प्रतियोगिता खेल कूद का शुभारंभ हुआ। विद्यालय की प्रधानाचार्य सीमा गौड़ द्वारा सर्वप्रथम खेलकूद प्रतियोगिता शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया और छत्राओं द्वारा मार्च पास्ट की सलामी दी गई।

खेलकूद प्रतियोगिता में विद्यालय की छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया विद्यालय में ही प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा है। जिसमें पूरे विद्यालय के स्कूल की बालिकाएं भाग लेकर अपने खेल का हुनर दिखाएंगे। बालिकाओं द्वारा बोरा रस, नींबू चम्मच रेस, दौड़ प्रतियोगिता, स्लो साइकिल रेस, कबड्डी, खो खो, जलेबी रेस, सुई धागा रेस आदि खेलों का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें सिर्फ बालिकाएं ही भाग ले रही है।

प्रधानाचार्य सीमा गौड़ ने कहा कि खेल हमें जोड़ने का काम करते हैं। खेल से मानसिक और बौद्धिक विकास होता है। खेल हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। खेल से हमें एक दूसरे सदैव जुड़े रहना चाहिए। खेलों से युवाओं में आगे बढ़ाने की भावना विकसित होती है। इसलिए खेल पर प्रतियोगिताएं छात्राओं के जीवन का अभी हिस्सा बनी चाहिए इस दौरान प्रबंधक जगदीश्वर प्रसाद सिंह उर्फ 'ओम जी' जितेंद्र सिंह उर्फ ष्मानिक भैया, मिथिलेश, निशा सिंह, कंचन पाठक, इरम फातिमा, सबेनूर फातिमा, जुनैद अहमद, प्रेम सागर, महबूब आलम, रंजीत श्रीवास्तव, अनिल कुमार श्रीवास्तव, विकास कुमार यादव, रत्नेश कुमार, बृजेश कुमार, पूजा, अंबिका, शिक्षक आदि मौजूद रहे।

भाकियू पदाधिकारियों का अनिश्चितकालीन धरना जारी

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। बांसी तहसील परिसर में भारतीय किसान यूनियन अंबावता का ज्ञापन किसी सक्षम अधिकारी की ओर से न लिए जाने से नाराज भाकियू पदाधिकारियों ने अनिश्चितकालीन धरना प्रारंभ कर दिया है। शुक्रवार को तहसील परिसर में अनिश्चितकालीन धरना चलता रहा। मंडल अध्यक्ष यार मोहम्मद चौधरी ने बताया कि जिला सचिव रहमत अली के नेतृत्व व पूर्वांचल प्रभारी कपिल देव राय की मौजूदगी में हुई पंचायत के बाद ज्ञापन देने के लिए निर्धारित समय तक इंतजार के बाद भी तहसील के किसी जिम्मेदार द्वारा ज्ञापन नहीं लिए जाने से आक्रोशित होकर अनिश्चित कालीन धरने का एलान कर दिया। इस अवसर पर भोला यादव, हरिप्रसाद शुक्ल, राजेश दुबे, बीपत पासवान, अनीस खान, सुदामा यादव, सुनीता निषाद, रजी देवी, बसंती, सरीता आदि मौजूद रहीं।

एमडीएम का राशन बेचने के आरोप में प्रभारी प्रधानाध्यापक पर मुकदमा, निलंबित

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। हिन्दुस्तान टीम। डुमरियागंज पुलिस ने भनवापुर ब्लॉक क्षेत्र के कंपोजिट विद्यालय भरवठिया बाजार के प्रभारी प्रधानाध्यापक समेत दो पर एमडीएम का राशन बेचने के आरोप में केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। पुलिस ने यह कार्रवाई बीईओ भनवापुर की तहरीर पर की है। वहीं बीएसए ने प्रभारी प्रधानाध्यापक को निलंबित कर दिया है। बीईओ राजेश कुमार ने डुमरियागंज पुलिस को तहरीर देकर बताया कि 25 दिसंबर की सुबह लगभग 9.30 बजे शिक्षा क्षेत्र भनवापुर के अंतर्गत पिकौरा गांव में संचालित पीएमश्री कंपोजिट पूमावि भरवठिया बाजार के प्रभारी प्रअ सूर्यवीर सिंह यादव द्वारा माध्याहन भोजन योजानान्तर्गत आवंटित खाद्यान्न को पिकअप पर लादकर बेचने के संबंध में ग्रामीणों की ओर से शिकायत मिली। इसके संबंध में नायब तहसीलदार द्वारा पिकअप पर लदा राशन डुमरियागंज थाने में लाकर खड़ा किया गया। इस संबंध में सोशल मीडिया पर एक ऑडियो भी वायरल हुआ है। इसमें प्रभारी प्रअ सूर्यवीर सिंह यादव द्वारा विद्यालय का निर्माण करा रहे ठेकेदार महेन्द्र से यह कहा जा रहा है कि विद्यालय में कुछ बोरी एमडीएम का राशन है, जिसे नीचे रखकर देवरिया चमन के स्थान पर पहुंचा दिया जाए। जिसका मोबाइल नंबर बाद में बताया जाएगा। इस ऑडियो से स्पष्ट है कि सूर्यवीर सिंह यादव द्वारा एमडीएम के लिए आवंटन राशन अन्यत्र स्थान पर भेजकर उस राशन का दुरुपयोग किया जा रहा है। प्रकरण में प्रथम दृष्ट्या अपराध प्रतीत हो रहा है। उन्होंने मामले में केस दर्ज कर कार्रवाई की मांग की।

प्रभारी निरीक्षक श्यामसुंदर तिवारी ने बताया कि आरोपित शिक्षक सूर्यवीर सिंह यादव व ठेकेदार महेंद्र के विरुद्ध बीएनस 2023 के तहत 316 (5) व 61(2) के तहत केस दर्ज कर लिया गया है। मामले की छानबीन की जा रही है। बीएसए, सिद्धार्थनगर देवेंद्र कुमार पांडेय ने कहा, कंपोजिट विद्यालय भरवठिया बाजार के संबंध में खाद्यान्न प्रकरण में इंचार्ज प्रधानाध्यापक को निलंबित कर दिया गया है। साथ हीं उनके खिलाफ एफआईआर भी दर्ज कराई गई है।

कंपोजिट विद्यालय भरवठिया बाजार के इंचार्ज प्रधानाध्यापक सूर्यवीर सिंह यादव ने कहा, मैं छुट्टी पर था। राजनीतिक साजिश के तहत मुझे फसाया जा रहा है। मेरे ऊपर लगाए गए आरोप बेबुनियाद हैं। विद्यालय के स्टॉक रजिस्टर में खाद्यान्न शून्य है। इतना ही नहीं डीसीएमडीएम द्वारा किए गए जांच में यह भी पता चला है कि संबंधित कोटेदार द्वारा मेरा हस्ताक्षर भी फर्जी किया गया है। इसकी जांच होनी चाहिए। ग्राम प्रधान व कोटेदार ने साजिश रच कर मुझे फंसाया है।

मकान में घुसा अनियंत्रित ट्रेलर

संवाददाता–संतकबीरनगर। संतकबीरनगर जिले के खलीलाबाद में शुक्रवार की सुबह सर्विस लेन के किनारे एक ट्रेलर अनियंत्रित होकर एक मकान में घुस गया। चालक केबिन में फंस गया है। मौके पर पहुंचे पुलिस कर्मी उसे निकालने के प्रयास में जुटे हैं। खलीलाबाद कोतवाली के बरदहिया बाजार के पास हाइवे के सर्विस लेन से एक ट्रेलर सीमेंट लादकर जा रहा था। होटल शिवाय के पास ट्रेलर अनियंत्रित होकर सड़क के किनारे एक खाली मकान में घुस गया। इससे चालक केबिन में फंसा गया है। वह सुरक्षित बताया गया है। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंच गई। उसे निकलवाने का प्रयास किया जा रहा है। मकान में कोई न रहने से बड़ी दुर्घटना बच गई। अन्य कोई हताहत नहीं है।

नहीं रुका पानी का बहाव, पांच सौ बीघा से ज्यादा फसल डूबी

संवाददाता–संतकबीरनगर। धर्मसिंहवा क्षेत्र में नहर मरम्मत कार्य में लापरवाही के चलते जगह–जगह चूहों के बिल के कारण नहर के पानी का रिसाव होने के कारण किसानों के गेहूं की फसलें डूब रही हैं। नहर के बंधे से हो रिसाव का पानी फैलकर आगे बढ़ते हुए सेवाइचपार और भुलकी सीवान तक पहुंच गया। जिससे मेंहदूपार तक दो हजार बीघा से अधिक गेहूं की फसल डूब गई है। अभी तक नहर विभाग का कोई अधिकारी–कर्मचारी नहीं पहुंचा। इससे किसानों में नहर विभाग के खिलाफ आक्रोश है। धर्मसिंहवा क्षेत्र में सिद्धार्थनगर जनपद के बांसी से होकर सरयू नहर खंड नहर धर्मसिंहवा थाना के किनारे से शिकरी–खजुरी होते हुए बखिरा की तरफ निकल गई है। इसी नहर की एक शाखा गौरीराई, केचुआखोर होकर मेहदूपार के उत्तर तरफ सीवान में खत्म हो गई है। नहर में हर साल मई, जून में साफ सफाई के नाम पर लाखों खर्च हो जाता है लेकिन नहर उसी तरह से बनी रहती है। पानी आते ही नहर के बंधे में बने रैट होल से रिसाव होने लगा। हर साल तो हकीम राई, बढ़या, बेलराई का सीवान ही डूबता था लेकिन इस बार बरगदवा, केचुआखोर, मेहदूपार के सीवान पिपरी, सेवाइचपार और भुलकी सीवान तक किसानों के सिंचाई की गई गेहूं की फसल डूब गई। दो दिन में दो हजार बीघा से ज्यादा डूब गई है। किसानों में नहर विभाग के खिलाफ आक्रोश है। साथ ही साथ अपने फसल को डूबने की चिंता भी सता रही है। क्षेत्र के किसानों ने कहा कि नहर विभाग की लापरवाही के कारण हर साल हम लोगों की गेहूं की फसल डूब जाती है। विभाग कोई ठोस कदम नहीं उठा रहा है।

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)
मु0 सं0 T 202417630208088 / 24
धारा 116 उ0प्र0रा0सं 2006
अदालत– श्रीमान उप जिलाधिकारी महोदय बांसी जिला– सिद्धार्थनगर

जुम्मन अली
बनाम
अब्दुल वहीद आदि

1. अब्दुल वहीद 2. फरीद अहमद पुत्रगण सहजाद 3. ग्राम पंचायत कोल्हुई साकिनान मौजा कोल्हुई तप्पा असनार परगना बांसी पूरव तहसील बांसी जिला–सिद्धार्थनगर

तारीख पेशी 05–01–2025

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 05 माह 01 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाव दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

बेदखली सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि प्रार्थी सोमई पुत्र मंगरू निवासी सोधिया थाना नगर तप्पा पिपरा परगना नगर पूरब तहसील व जनपद बस्ती (उ.प्र.) का निवासी है। मेरे पुत्र सुनील कुमार का चाल चलन ठीक नहीं है। वह आये दिन अपनी पत्नी के साथ परिवार में कलह किया करता है। समझाने पर भी नहीं मानता। सुनील कुमार सदैव मानसिक और शारीरिक रूप से मुझे प्रताड़ित करता है और कोई सेवा नहीं करता इसे देखते हुये मैं उसे 26–12–2024 से अपने चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर रहा हूं। अपने किसी भी कृत्य, लेन देन, वाद विवाद आदि के लिये सुनील कुमार स्वयं जिम्मेदार होगा। अब उसका मेरे परिवार से कोई सम्बन्ध नहीं है। प्रकाशन इसलिये करा रहा हूं कि वक्त जरूरत पर काम आवे।

किशोरी का अपहरण कर दुष्कर्म का आरोपित गिरफ्तार

संवाददाता–गोरखपुर। गुलरिहा क्षेत्र में एक गांव की 13 वर्षीय किशोरी का अपहरण कर उसके साथ दुष्कर्म करने के आरोपित को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उसे शुक्रवार को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया। जानकारी के अनुसार, 17 मार्च 2023 को अरविंद निषाद किशोरी को बहला फुसलाकर भगा ले गया था। किशोरी के पिता की तहरीर पर पुलिस आरोपित सहित छह के खिलाफ अपहरण का केस दर्ज कर किशोरी की तलाश कर रही थी। विवेचना में किशोरी से दुष्कर्म की बात सामने आने पर पुलिस ने दुष्कर्म व पॉक्सो एक्ट की धारा बढ़ा दिया था। शुक्रवार की सुबह पुलिस ने अरविंद निषाद को गिरफ्तार कर लिया।

जिले में 308 वाहन घोषित किए गए कबा

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले में कबाड़ वाहनों का संचालन रुक नहीं रहा है। हालत यह है कि अब तक जनपद में कुल 308 वाहन कबाड़ किए गए हैं। वैसे देश में स्क्रैप पॉलिसी वर्ष 2021 में लागू की गई थी, जिसमें यह कहा गया था कि 15 वर्ष पुराने वाहनों का दोबारा रजिस्ट्रेशन नहीं किया जाएगा लेकिन यह योजना हांफती नजर आ रही है। जिससे जिले में दुर्घटनाएं कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। वर्ष 2024 में 105 वाहन और अपनी उम्र को पूरी कर लेंगे। केंद्र सरकार ने वर्ष 2021 में 15 वर्ष से पुराने वाहनों के नवीनीकरण पर रोक लगा दी है। फिर भी सड़कों पर कबाड़ वाहन सरपट दौड़ रहे हैं। ऐसे में अब तक जनपद में कुल 308 वाहन कबाड़ घोषित किए गए हैं। वहीं इसमें 18 सरकारी वाहन भी शामिल हैं। इस आदेश में यह भी उल्लिखित किया गया है कि यदि आप किसी वाहन का उपयोग नहीं करना चाहते हैं तो उसे कबाड़ में बेचने से पहले उसका पंजीयन निरस्त कराना होगा। वाहन को कबाड़ में बेचने से पहले एआरटीओ कार्यालय से इसकी अनुमति लेनी होगी। वहां उसके चेचिस नंबर से उसका पंजीयन निरस्त कराना होगा। वाहन किसी रजिस्टर्ड कबाड़ी को ही बेचना होगा, ताकि वहां से गाड़ी का चेचिस नंबर मिल सके। लेकिन परिवहन विभाग की उदासीनता के कारण अब भी सड़कों पर ये वाहन दौड़ रहे हैं। जिले में स्कैप पॉलिसी बहरहाल अभी पूरी तरह से लागू नहीं की गई है। अभी इस योजना को पंख नहीं लग पाए हैं।

शहीदी पर्व पर गुरुद्वारे में गूंज रहे शबद कीर्तन

संवाददाता–संतकबीरनगर। संतकबीरनगर जिले के गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा में सिक्ख धर्म के नवें गुरु गुरु तेग बहादुर जी महाराज के शहीदी पर्व पर शबद कीर्तन गूंज रहे हैं। अमृतसर से आए जत्थे ने शबद कीर्तन प्रस्तुत कर लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के समापन पर लोगों ने गुरु के लंगर में प्रसाद छका। शहीदी पर्व पर गुरुद्वारा के ग्रंथी भाई सोहन सिंह ने गुरु शबद 'राजन के राजा महाराजन के राजा... सुना कर सबका मन मोह लिया। उसके बाद अमृतसर से आए प्रसिद्ध रागी जत्थे के भाई सतनाम सिंह ने गुरु के शबद 'धन दशमेश पिता तेरा धन जिगरा..., 'हर को नाम सदा नाम सदा सुखदाई... सुना कर गुरुद्वारा परिसर भक्ति मय कर दिया। दिल्ली से आए कथा वाचक भाई जगदेव सिंह ने गुरु तेग बहादुर जी पर गुरु परंपरा और उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लेने की अपील की। गुरुद्वारा के अध्यक्ष सरदार अजीत सिंह ने कहा कि गुरु तेग बहादुर जी का इतिहास त्याग, तपस्या और बलिदान का रहा है। उन्होंने अपनी शीश देकर धर्म और संस्कृति की रक्षा की। अरदास के बाद समापन हुआ। कार्यक्रम में सरदार दलजीत सिंह, मनप्रीत सिंह, राजेंद्र सिंह, पुनीत सिंह, जसबीर सिंह, राजपाल सिंह, देवेंद्र सिंह, गुरदीप सिंह, हरभजन सिंह, धर्म सिंह, परविंदर सिंह, राजेंद्र पाल सिंह, रविंद्र पाल सिंह, अमरजीत सिंह, हरप्रीत सिंह, हरदीप सिंह, सीनू सिंह, गुरुभेज सिंह, परमजीत सिंह, त्रिलोचन सिंह, बलवंत कौर, परमजीत कौर, रणजीत कौर, कमलजीत कौर, राजेंद्र कौर, सीमा कौर, कन्हैया वर्मा, राधेश्याम जयसवाल, अजय सेठी सहित सैकड़ों श्रद्धालु मौजूद रहे।

टेलर की दुकान में लगी आग, हजारों का नुकसान

संवाददाता–अम्बेडकरनगर। थाना क्षेत्र जहांगीरगंज के मामपुर कस्बे में स्थित एक टेलर की दुकान में अचानक आग लग गई। जिससे दुकान में रखे ग्राहकों के तमाम कपड़े जलकर खाक हो गए। आग लगने से हजारों का नुकसान हो गया। बताया जाता है कि थाना क्षेत्र जहांगीरगंज के नगर पंचायत जहांगीरगंज के मामपुर वार्ड में स्थित एम.के.जीएन स्कूल के सामने निजामुद्दीन मार्केट में स्थित फिरोज टेलर की दुकान में शुक्रवार को भोर में लगभग 5 बजे अचानक धुंआ उठने लगा। देखते ही देखते दुकान में आग लग गई। स्थानीय लोगों ने जब तक आग पर काबू पाया तब तक हजारों रुपए के ग्राहकों के कपड़े और अन्य सामान जलकर खाक हो गया। आग लगने का कारण दुकान में बिजली के तारों में शार्ट सर्किट होना बताया जा रहा है। आग में लगभग बीस हजार रुपए से अधिक कीमत के कपड़े जलकर खाक हो गए।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैंने अपना नाम अली अहमद से बदलकर अली अहमद खान ALI AHAMAD KHAN रख लिया है अब मुझे इसी नाम से जाना एवं समझा जाए।

अली अहमद खान
पुत्र इसहाक अहमद खान
मोहल्ला पचपेड़िया, पोस्ट पुरानी बस्ती, जिला बस्ती (उ.प्र.)

अदालती नोटिस

इश्तहार मजरिया अदालत– श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) बस्ती जिला–बस्ती
प्रकीर्णवाद सं0 348 / 2024
बैजू–सायल
1. बैजू आयु करीब 50 साल पुत्र राम सुन्दर साकिन पेरीपोखर पोस्ट हरीश नगर जिला–बस्ती हाल पता साकिन दुबौलिया दूबे पोस्ट शंकरपुर तप्पा सिकन्दरपुर परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला–बस्ती

तारीख पेशी 07–01–2025

प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा–372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम–1925
दरख्वास्त मुसम्मा वास्ते हुसूल सर्टीफिकेट वसूल कर्जा व विकालत हाय दरख्वास्त मुसम्मा मुतवफ्फा अपने बमूजिब एक्ट 7 सन 1889 ई0 वकैद

हरगाह मुसम्मा ने दरख्वास्त हुसूल सर्टीफिकेट गुजरानी है और तारीख माह सन ई0 वास्ते समाअत दरख्वास्त के मुकर्रर हुई है। लिहाजा यह इश्तिहार जारी किया जाता है कि किसी को निस्बत के उज्र हो या असालतन या वकालतन वक्त 10 बजे सुबह अदालत सिविल जज (जू0डि0) बस्ती बतारीख पेशी 07–01–2025 मुकर्रर हाजिर होकर उज्र अपना पेश करें। दरसूरत इनकजाय तारीख मजकूर के फिर उज्र किसी का सुना न जायेगा और हुक्म मुनासिब निस्बत दरख्वास्त मजकूर के सादिर होगा।
अलमरकूम माह सन 20 ई0।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इश्तहार मजरिया अदालत– श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) बस्ती जिला–बस्ती
प्रकीर्णवाद सं0 351 / 2024
राजेश प्रताप सिंह–सायलान
1. राजेश प्रताप सिंह उम्र 50 साल 2. अजय प्रताप सिंह उम्र 45 साल पुत्रगण रण बहादुर सिंह साकिनान उसका तप्पा अतरोह परगना बस्ती पश्चिम तहसील हर्रैया जिला–बस्ती पोस्ट बभनान

तारीख पेशी 24–01–2025

प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा–372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम–1925
दरख्वास्त मुसम्मा वास्ते हुसूल सर्टीफिकेट वसूल कर्जा व विकालत हाय दरख्वास्त मुसम्मा मुतवफ्फा अपने बमूजिब एक्ट 7 सन 1889 ई0 वकैद

हरगाह मुसम्मा ने दरख्वास्त हुसूल सर्टीफिकेट गुजरानी है और तारीख माह सन ई0 वास्ते समाअत दरख्वास्त के मुकर्रर हुई है। लिहाजा यह इश्तिहार जारी किया जाता है कि किसी को निस्बत के उज्र हो या असालतन या वकालतन वक्त 10 बजे सुबह अदालत सिविल जज (जू0डि0) बस्ती बतारीख पेशी 24–01–2025 मुकर्रर हाजिर होकर उज्र अपना पेश करें। दरसूरत इनकजाय तारीख मजकूर के फिर उज्र किसी का सुना न जायेगा और हुक्म मुनासिब निस्बत दरख्वास्त मजकूर के सादिर होगा।
अलमरकूम माह सन 20 ई0।
द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह
संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो09450567450 9336715406,
ई.मेलbhartiyabasti@yahoo.com
bhartiyabasti@gmail.com